वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :5 अंक : 192 | रविवार 9 नवम्बर 2025 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

ईसरदा बांध से रामगढ़ बांध तक पानी पहुंचाने का सपना होगा साकार

104 किमी लंबी पाइपलाइन के लिए सर्वे पूरा

जयपुर. कासं

शहर की बरसों तक प्यास बुझाने वाला मुख्य पेयजल स्रोत रामगढ़ बांध जल्द ही फिर से पानी से लबालब होने वाला है। राज्य सरकार की ईआरसीपी-पीकेसी संशोधित रामजल जल सेतु परियोजना के तहत 1915 करोड़ रुपए की लागत से ईसरदा बांध से पाइप लाइनों के जरिए रामगढ़ बांध में पानी पहुंचाने की योजना को मंजूरी मिली थी। इस महत्वाकांक्षी योजना की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए, हैदराबाद की एक निजी कंपनी ने पाइपलाइन बिछाने के लिए पट्टी सर्वेक्षण (स्ट्रीप सर्वे) का काम पूरा कर लिया है। कंपनी अब सर्वे रिपोर्ट तैयार कर सरकार को सौंपेगी। परियोजना के पूरा होने के बाद, अगले तीन साल में रामगढ़ बांध में ईसरदा बांध का पानी पहुंचना प्रस्तावित है। यह परियोजना मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और जनता के लिए एक बड़ी उपलब्धि साबित होगी, जिसकी शुरूआत 5 जून (विश्व पर्यावरण दिवस) को रामगढ़ बांध जीर्णोद्धार कार्यक्रम से हुई थी। तकनीकी टीम के अनुसार, ईसरदा बांध

से रामगढ़ बांध तक करीब 104 किलोमीटर लंबी पाइपलाइन बिछाई जाएगी। यह पाइपलाइन तीन हजार एमएम (लगभग दस फीट) व्यास की होगी और इसे लगभग तीन मीटर गहराई में डाला जाएगा।

परियोजना की मुख्य विशेषताएं

पाइपलाइन की लंबाई: लगभग 104 किलोमीटर। **पाइपलाइन का व्यास:** 3000 एमएम (10 फीट)। **पंपिंग स्टेशन:** पानी को बांध तक पहुंचाने के लिए दो स्थानों पर पंप हाउस या पंपिंग स्टेशन बनाए जाएंगे, जिनके स्थान का निर्धारण जल्द होगा। **नहर (केनाल) निर्माण:** प्रोजेक्ट के तहत 80 से 85 किलोमीटर तक पाइपलाइन और लगभग 20 किलोमीटर में दो नहरें (केनाल) भी बनाई जाएंगी। सर्वे के दौरान ईसरदा बांध से रामगढ़ तक की समुद्र तल से ऊंचाई की पैमाइश की गई है। यह परियोजना तीन वर्षों में पूरी होना प्रस्तावित है, जिससे जयपुर क्षेत्र के लोगों का वर्षों पुराना रामगढ़ बांध को लबालब देखने का सपना साकार होगा।

नेशनल अर्बन कॉन्क्लेव 2025 में खर्रा की सहभागिता

राजस्थान के शहरी मॉडल पर जोर

नई दिल्ली/जयपुर. कासं

नई दिल्ली स्थित यशोभूमि कन्वेंशन सेंटर में आयोजित 'नेशनल अर्बन कॉन्क्लेव 2025' भारत के शहरी विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण आयोजन सिद्ध हुआ। इस राष्ट्रीय कॉन्क्लेव में राजस्थान सरकार के नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने सक्रिय सहभागिता की। उन्होंने विकसित भारत के लिए सतत, समावेशी और भविष्य-तैयार शहरी मॉडल पर अपने विचार साझा किए, जिससे राजस्थान के अनुभवों को राष्ट्रीय मंच मिला। मुख्य अतिथि केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल खट्टर थे। मंत्री खर्रा ने इस अवसर पर कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 'विकसित भारत @2047' का संकल्प केवल आर्थिक प्रगति का ही नहीं, बल्कि जीवन-स्तर उन्नयन और प्रौद्योगिकी-संचालित, जनकेंद्रित शहरी शासन का भी प्रतीक है। उन्होंने इस कॉन्क्लेव को उस सामूहिक दृष्टि और प्रतिबद्धता का सशक्त उदाहरण बताया।

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर का बड़ा ऐलान

प्रदेश में अब साल में दो बार होगी बोर्ड परीक्षा, छात्रों को मिलेगी राहत

कोटा/जयपुर. कासं

राजस्थान के शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्रों के लिए एक बड़ा और ऐतिहासिक फैसला लिया है। उन्होंने घोषणा की है कि अगले सत्र से छात्रों को एक ही सत्र में दो बार बोर्ड परीक्षा देने का अवसर मिलेगा। यह कदम राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के प्रावधानों के तहत उठाया गया है, जिसका उद्देश्य छात्रों को बेहतर प्रदर्शन और परिणाम सुधारने का मौका देना है। शिक्षा मंत्री ने यह घोषणा शनिवार को कोटा के गणेश नगर में आयोजित एक सार्वजनिक समारोह में की। शिक्षा मंत्री ने बताया कि इस नई व्यवस्था में 'बेस्ट ऑफ टू अटेम्प्ट्स' (दोनों में से सर्वश्रेष्ठ) का सिद्धांत लागू रहेगा। **प्रथम मुख्य परीक्षा:** साल में एक बार फरवरी-मार्च में आयोजित की जाएगी। **द्वितीय अवसर परीक्षा:** पहली परीक्षा के परिणाम की घोषणा के बाद उसी सत्र में दूसरी परीक्षा मई-जून में आयोजित की जाएगी। सभी विद्यार्थियों के लिए प्रथम बोर्ड परीक्षा में शामिल होना अनिवार्य होगा।

दूसरी परीक्षा में शामिल होने के नियम इस प्रकार हैं:

उत्तीर्ण (पास) छात्र: प्रथम परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्र अधिकतम किन्हीं तीन विषयों में दूसरी परीक्षा देकर अपने प्रदर्शन में सुधार कर सकेंगे। **पूरक योग्य/अनुत्तीर्ण (फेल) छात्र:** पूरक योग्य घोषित विद्यार्थियों को भी अधिकतम तीन विषयों में दूसरे अवसर में परिणाम सुधारने की अनुमति होगी, जिसमें पूरक विषय शामिल रहेंगे।

पुनरावृत्ति श्रेणी और अनुपस्थिति का नियम

यदि कोई छात्र द्वितीय अवसर की परीक्षा में भी किसी विषय में अनुत्तीर्ण रहता है, तो ऐसे विद्यार्थियों को आवश्यक पुनरावृत्ति श्रेणी में रखा जाएगा। वे केवल अगले वर्ष फरवरी माह की मुख्य परीक्षा में ही शामिल हो सकेंगे। मुख्य परीक्षा में अनुपस्थित (गैरमौजूद) रहने वाले विद्यार्थियों को केवल सक्षम अधिकारी के चिकित्सा प्रमाण पत्र या संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक मुख्यालय) द्वारा जारी प्रमाण पत्र के आधार पर ही द्वितीय अवसर परीक्षा में प्रवेश की अनुमति दी जाएगी। द्वितीय अवसर परीक्षा का शुल्क मुख्य परीक्षा के समान ही रहेगा।

दिगंबर जैन समाज सामाजिक संसद ने हंसमुख गांधी को किया सम्मानित

हंसमुख गांधी द्वारा संपादित 'दिगंबर जैन तीर्थ निर्देशिका' गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल

इंदौर. शाबाश इंडिया। दिगंबर जैन समाज के लिए गर्व का विषय है कि श्री हंसमुख गांधी द्वारा संपादित ''दिगंबर जैन तीर्थ निर्देशिका'' को गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में स्थान प्राप्त हुआ है। इस गौरवपूर्ण उपलब्धि पर दिगंबर जैन समाज सामाजिक संसद, इंदौर की ओर से श्री हंसमुख गांधी का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर समाज के वरिष्ठ पदाधिकारी, गणमान्य नागरिक और देशभर से आए प्रतिनिधि बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। **समाज के वरिष्ठजनों की उपस्थिति में हुआ सम्मान समारोह:** सामाजिक संसद के प्रचार प्रमुख सतीश जैन ने बताया कि इस उपलब्धि पर समाज के अध्यक्ष श्री राजकुमार पाटोदी, संरक्षिका श्रीमती पुष्पा कासलीवाल, महामंत्री श्री सुशील पांड्या, फेडरेशन अध्यक्ष श्री मनोहर जी झांझरी, राकेश जी विनायका, महावीर ट्रस्ट अध्यक्ष श्री अमित कासलीवाल, आर.के. जैन बाहुबली पांड्या, कमलेश कासलीवाल, संजय जैन अहिंसा, डॉ. अनुपम जैन, प्रदीप चौधरी, राकेश जैन लॉरेल, महावीर टाइम्स के प्रधान संपादक श्री हेमंत जैन, और श्री दिलीप मेहता सहित अनेक प्रतिष्ठित अतिथि उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान श्री हंसमुख गांधी को विशिष्ट पगड़ी, माला और दुपट्टा पहनाकर सम्मानित किया गया। **विश्व रिकॉर्ड प्रमाण पत्र से सम्मानित:** गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के प्रतिनिधि डॉ. मनीष बिश्नोई विशेष रूप से इंदौर पधारे और उन्होंने श्री हंसमुख गांधी को विश्व रिकॉर्ड प्रमाण पत्र प्रदान किया। यह निर्देशिका अब तक प्रकाशित 12वां संस्करण है, जिसमें देशभर के 267 प्रमुख दिगंबर जैन तीर्थों का विस्तृत संकलन किया गया है। **विमोचनकर्ताओं का योगदान:** दिगंबर जैन तीर्थ निर्देशिका के विमोचनकर्ता थे श्री आजाद जी जैन एवं श्रीमती रवि देवी जैन (बीड़ीवाला परिवार), जिन्होंने इस आध्यात्मिक कृति को समाज के लिए ज्ञान का भंडार बताया।

सतीश जैन (इला बैंक) प्रचार प्रमुख,

16 नवंबर से शांतिनाथ धाम, सिरोंजा (सागर) में होगा ऐतिहासिक भव्य पंचकल्याणक महामहोत्सव

समिति ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से भेंटकर महोत्सव में आने का आमंत्रण दिया

सागर. शाबाश इंडिया। 16 से 21 नवंबर 2025 तक श्री बाबूलाल ताराबाई जैन धर्मार्थ ट्रस्ट, बी.टी.आई.आर.टी. परिसर, सिरोंजा, सागर (म.प्र.) में अध्यात्मयोगी चर्या शिरोमणि आचार्य श्री 108 विशुद्ध सागर जी महामुनिराज ससंघ के पावन सान्निध्य में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव का भव्य आयोजन किया जाएगा। इस पुण्य महोत्सव का आयोजन करने का सौभाग्य सिंघई सुरेंद्र कुमारझसंतोष कुमार जैन 'घड़ी', शैलेंद्र सिंघई, डॉ. सत्येंद्र जैन, तथा संदीप जैन (बी.टी.आई.आर.टी. परिवार, सागर) को प्राप्त हुआ है। महोत्सव की तैयारियां वर्तमान में युद्ध स्तर पर और अत्यंत भव्यता से की जा रही हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को दिया गया आमंत्रण

डॉ. सुनील संचय ने जानकारी दी कि इस ऐतिहासिक धार्मिक आयोजन में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है। इस अवसर पर श्री संतोष जैन ह्यघड़ीह्ल के नेतृत्व में समिति के एक प्रतिनिधिमंडल ने भोपाल में मुख्यमंत्री जी से भेंट की और उन्हें पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव में पधारने का सादर निमंत्रण दिया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शांतिनाथ धाम (बी.टी.आई.आर.टी., सिरोंजा, सागर) में आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में होने वाले इस पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव में उपस्थित रहने एवं आचार्यश्री से आशीर्वाद ग्रहण करने का आश्वासन दिया।

गणाचार्य गुरुवर विराग सागर जी महाराज का 34वां आचार्य पदारोहण दिवस श्रद्धा व भक्ति से मनाया गया

आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ससंघ के सान्निध्य में औबेदुल्लागंज में हुआ भव्य आयोजन

भोपाल. शाबाश इंडिया

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, औबेदुल्लागंज में परम पूज्य भारत गौरव गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ससंघ के सान्निध्य में गणाचार्य गुरुवर विराग सागर जी महाराज का 34वां आचार्य पदारोहण दिवस महोत्सव बड़े ही श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। मंदिर समिति के अध्यक्ष सुनील जैन ने बताया कि कार्यक्रम की शुरूआत प्रातःकालीन मंगल बेला में अभिषेक और शांतिधारा के साथ हुई। तत्पश्चात गुरु भक्तों ने पूज्य माताजी के पाद प्रक्षालन कर उनके करकमलों में शास्त्र भेंट किए।

भक्ति और गुरु वंदना से गुंजायमान रहा मंदिर परिसर: गुरु भक्ति से ओतप्रोत श्रद्धालुओं ने अष्टद्रव्य मयी अर्घ्य चढ़ाकर गुरु गुणगान करते हुए अर्घ्य अर्पित किए। इसके पश्चात प्रवचन सभा का शुभारंभ हुआ, जिसमें उपस्थित श्रद्धालुगण पूज्य गुरु मां के मुखारविंद से निकली जिनवाणी के अमृत रस का श्रवण कर भावविभोर हो उठे।

गुरु के उपकारों का वर्णन करते हुए माताजी ने कहा ''गुरु के उपकारों का कोई मोल नहीं होता, क्योंकि उन्हीं में जीव का कल्याण निहित है। संसार की सारी संपत्ति भी गुरु कृपा के आगे फीकी पड़ जाती है। यदि गुरु के उपकारों का प्रतिदान न दे सको, तो कम से कम उनके प्रति अपकार न करो। यही सच्ची भक्ति है।''

माताजी ने यह भी कहा कि यह भावना प्रत्येक शिष्य के हृदय में स्थिर होनी चाहिए, तभी जैन धर्म का नाम विश्व पटल पर स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा। **दीप आरती और आहारचर्या से हुआ कार्यक्रम का समापन:** संध्या बेला में 34 दीपकों से आचार्य गुरुवर विराग सागर जी महाराज की मंगलमय आरती संपन्न हुई। भक्तों ने आर्यिका संघ की आहारचर्या को निर्विघ्न रूप से संपन्न कराया। पूरे दिन मंदिर का वातावरण भक्ति, श्रद्धा और आनंद से परिपूर्ण रहा।

मंदिर परिसर में उपस्थित श्रद्धालुओं ने कहा कि ''जहां गुरु मां के चरण पड़ते हैं, वहां का कण-कण पवित्र और पावन हो जाता है।''

16 नवंबर को दानिश कुंज में पिच्छिका परिवर्तन समारोह: मंदिर समिति ने जानकारी दी कि आगामी 16 नवंबर को पूज्य आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ससंघ के सान्निध्य में दानिश कुंज दिगंबर जैन मंदिर, भोपाल में भव्य पिच्छिका परिवर्तन समारोह का आयोजन किया जाएगा। समिति ने सभी श्रद्धालुओं से विनम्र निवेदन किया है कि वे सपरिवार पधारकर इस पुण्य अवसर का लाभ लें और पुण्यार्जन करें।

आचार्य श्री विनिश्चय सागर महाराज के सान्निध्य में घटयात्रा, ध्वजारोहण व संकलीकरण के साथ पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव का शुभारंभ

आचार्य श्री ने बताया पंचकल्याणक महोत्सव का महत्व—यह पांच दिन आपके जीवन के लिए अनमोल हैं...

रामगंजमंडी. शाबाश इंडिया

परम पूज्य आचार्य श्री 108 विनिश्चय सागर महाराज के सान्निध्य में पांच दिवसीय पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव का शुभारंभ धार्मिक उल्लास एवं भक्ति के वातावरण में हुआ। ब्रह्मचारी नमन भया के निर्देशन में आरंभ हुए इस महोत्सव में प्रातःकाल से ही श्रद्धालुओं की भीड़ मंदिर परिसर में उमड़ पड़ी। सर्वप्रथम देव आज्ञा लेकर महोत्सव के निर्विघ्न संपन्न होने की प्रार्थना की गई। इसके पश्चात नगर के प्रमुख मार्गों से भव्य घटयात्रा निकाली गई, जिसमें श्रद्धालुओं का अपार उत्साह देखने को मिला। मुख्य पंडाल में श्रीजी को विराजमान कर अभिषेक, शांति धारा, वेदी शुद्धि, मंडप शुद्धि आदि धार्मिक क्रियाएं संपन्न हुईं।

ध्वजारोहण से हुई आध्यात्मिक शुरूआत

महोत्सव की शुरूआत में ध्वजारोहण समारोह संपन्न हुआ, जो श्रीमान भगवान स्वरूप, पदम कुमार, नीरज कुमार (देवरी वाले, खानपुर) परिवार की ओर से किया गया मंदिर परिसर भक्ति से ओतप्रोत वातावरण में गूंज उठा। इसी क्रम में इंद्र प्रतिष्ठा, संकलीकरण एवं याग मंडल विधान की पवित्र क्रियाएं संपन्न की गईं।

गर्भ कल्याणक की खुशियों से गूंजी रामगंजमंडी

दोपहर की बेला में भगवान की माता की गोद भराई की गई एवं गर्भ कल्याणक की आनंदमयी झांकियों से समूचा वातावरण भक्तिमय हो गया। भगवान के माता-पिता बनने का परम सौभाग्य श्रीमती सुधा जयकुमार डूंगरवाल परिवार को प्राप्त हुआ।

आचार्य श्री ने समझाया पंचकल्याणक का महत्व

आचार्य श्री 108 विनिश्चय सागर महाराज ने अपने प्रेरक प्रवचन में कहा कि हम अपने परमात्मा का गर्भ कल्याणक मना रहे हैं, यह कोई साधारण अवसर नहीं है। ऐसे क्षणों में तीनों लोक क्षणभर के लिए सुखानुभूति प्राप्त करते हैं। ऐसे महान जीवों का हम गर्भ कल्याणक मनाते हैं। उन्होंने कहा तीनों लोकों में ख्याति प्राप्त करने के लिए विशेष बनना पड़ता है – केवल स्वयं को ही नहीं, जन्मदाता और गर्भधारण करने वाले को भी। गर्भ कल्याणक इसीलिए विशिष्ट है।

आज है सच्चा मदर्स डेः आचार्य श्री

गुरुदेव ने भावपूर्ण शैली में कहा कि आज वास्तव में मदर्स डे है, क्योंकि गर्भ कल्याणक ही मातृ दिवस है। तीर्थंकर को गर्भ में धारण करने की पात्रता हर किसी में नहीं होती। जो तीर्थंकर भगवान की अनंत भक्ति करता है, वही इस योग्यता को प्राप्त करता है। परमात्मा से गले मिलकर नहीं, आस्था से जुड़ा जाता है। इतनी गहराई से जुड़ना चाहिए कि यदि पुरुष हैं तो तीर्थंकर बनें, और यदि महिलाएं हैं तो तीर्थंकर की माता बनें।

पंचकल्याणक के पांच दिन हैं जीवन के लिए अनमोल

आचार्य श्री ने कहा कि यह पंचकल्याणक के पांच दिन आपके जीवन के लिए अनमोल हैं। तीनों लोकों की संपत्ति एक ओर

और तीर्थंकर भगवान के कल्याणक की भावना दूसरी ओर – तुलना ही नहीं हो सकती। हमारे विचार, हमारी क्रियाएं, हमारे कदम – सब में तीर्थंकर भगवान के कल्याणक की भावना होनी चाहिए। तब ही जीवन आनंद से भर जाएगा। झोली फैलाना है तो छोटी क्यों फैला रहे?

गुरुदेव ने अपने प्रवचन में कहा...

यदि हम झोली फैला रहे हैं तो छोटी क्यों फैला रहे हैं? इतनी बड़ी फैलाओ कि देने वाला थक जाए। मांग ऐसी करो कि मांगने वाला भी सोच में पड़ जाए। लोग भगवान के सामने जाकर कहते हैं – मेरी दुकान चल जाए, मेरा काम बन जाए। पर मैं भगवान के सामने छोटा भिखारी बनकर नहीं, बड़ा भिखारी बनकर जाता हूं। मैं वही मांगता हूं जो भगवान के पास है – ज्ञान, वैराग्य, मोक्ष। कमजोर भावनाओं से कुछ नहीं मिलता; प्रबल भावना ही आत्मा को तीर्थंकर पद की ओर ले जाती है। उन्होंने आगे कहा कि रामगंजमंडी के लोग कमजोर नहीं हैं। ऐसी झोली फैलाओ कि देने वाला भी सोच में पड़ जाए। इन पांच दिनों में अपनी भावनाओं को इतना ऊंचा उठाओ कि तुम्हारी इच्छा केवल मोक्ष, अनंत चतुष्टय और तीर्थंकर पद की हो। **आज मैं जो हूं, अपने गुरु आचार्य विराग सागर जी महाराज की वजह से हूं:** आचार्य श्री ने अपने गुरु आचार्य श्री 108 विराग सागर महाराज के आचार्य पदारोहण दिवस पर भावपूर्ण शब्दों में श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा आज मैं जो कुछ भी हूं, अपने गुरुदेव आचार्य श्री विराग सागर महाराज की वजह से हूं। यदि गुरुदेव नहीं होते, तो मैं भी नहीं होता। उन्होंने ही मुझे दिगंबर बनाया, मनुष्य जन्म को सार्थक करने का वरदान दिया। उनके उपकारों को हम केवल स्मरण ही कर सकते हैं। **रविवार को मनाया जाएगा जन्म कल्याणक महोत्सव:** महोत्सव के दूसरे चरण में रविवार की बेला में जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया जाएगा। भगवान के जन्म की खुशियां नगर में शोभायात्रा के रूप में मनाई जाएंगी, जो नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई कृषि उपज मंडी पहुंचेगी, जहाँ स्थित पाण्डुक शिला पर श्रीजी का अभिषेक संपन्न होगा।

(रिपोर्ट : अभिषेक जैन लुहाड़िया, रामगंजमंडी)

वेद ज्ञान

सागर मंथन हर मनुष्य पूरी जिंदगी करता है

सनातन धर्म की कुछ कथाओं की सार्थकता हर युग में पाई जाती है। जैसे राम-रावण युद्ध, महाभारत और सागर मंथन। सागर मंथन हर मनुष्य पूरी जिंदगी करता है। यदि देवताओं की तरह उसके प्रयास और कार्यप्रणाली सत्मार्गी है तो उसे अमृत की प्राप्ति होती है। अन्यथा अनैतिक मार्गों के द्वारा किए मंथन के द्वारा अहंकार रूपी मदिरा प्राप्त होती है, जिसे पीकर वह पतन को प्राप्त होता है। इसी प्रकार राम-रावण युद्ध भी हर समय लड़ा जा रहा है। जो प्राणी सुग्रीव और विभीषण की तरह भगवान के पक्ष में युद्ध करते हैं उन्हें भवसागर को पार करने में विजय प्राप्त होती है और रावण की सेना के राक्षस जीवन मरण रूपी भवसागर में डूबते, उतरते रहते हैं और बार-बार अपने कर्मों के अनुसार निम्नतर योनियों में जन्म लेकर नर्क का दुख भोगते हैं। इसी प्रकार महाभारत की कथा का चित्रण भी किया गया है। गुरुनानक देव के अनुसार केवल मनुष्य ही ऐसा प्राणी है, जिसे बुद्धि और विवेक के अनुसार कर्म करने का अधिकार प्राप्त होता है। जिस प्रकार बुद्धि और विवेक मनुष्य को सत्कर्मों की तरफ प्रेरित करते हैं, उसी प्रकार अंधी इच्छाएं उसे मानसिक व्याधियां प्रदान करती हैं। महाभारत के कथानक के अनुसार धृतराष्ट्र की इच्छाएं अंधी थीं। इन अंधी इच्छाओं से उत्पन्न संतानें भी उसी प्रकार ईर्ष्या, लोभ, मोह रूपी पुत्रों-दुर्योधन और दुशासन आदि कहलाती हैं। बुद्धि और विवेक रूपी पांडव और धृतराष्ट्र और उनके पुत्रों रूपी बुराइयां हर मनुष्य में होती हैं, परंतु कृष्णरूपी अच्छे पथ- प्रदर्शक और मनुष्य की अपनी मेहनत और विवेक के जरिये कुछ जीवनरूपी महाभारत को जीत लेते हैं और शेष लोग अपनी इच्छाओं की पूर्ति करते-करते कौरवों की तरह जीवनरूपी संग्राम में मारे जाते हैं। ज्यादातर लोग अपनी बुराइयों के कारण असफल होने पर कहते हैं कि इस युग में कृष्णरूपी सारथी कहां तलाशें, परंतु ऐसे लोगों को यदि कोई अच्छा पथप्रदर्शक मिलता भी है तो ये उसके दिखाए मार्ग की खिल्ली उड़ाकर उस पर नहीं चलते हैं। भगवान कृष्ण ने दुर्योधन और धृतराष्ट्र को समझाकर सद्मार्ग पर चलने के लिए कहा था उसी प्रकार दुर्योधन ने भगवान का मजाक उड़ाकर उनके दिखाए मार्ग पर चलने से मना कर दिया था।

संपादकीय

राष्ट्रीयता का मान 'वंदे मातरम्'

इस समय पूरा देश 'वंदे मातरम्' के 150 साल पूरे होने का ऐतिहासिक जश्न मना रहा है। यह सिर्फ एक गीत नहीं, बल्कि आजादी की वह बुलंद आवाज है जिसने गुलामी की जंजीरों में जकड़े भारतवासियों को हिम्मत, जोश और अटूट भरोसा दिया कि मातृभूमि के लिए सब कुछ कुर्बान किया जा सकता है। यह राष्ट्रीय गीत भारतीय चेतना का वह प्रतीक है, जिसने हर पीढ़ी को राष्ट्र के प्रति समर्पण का पाठ पढ़ाया है। बंकिमचंद्र की कलम

से उठी क्रांति की मशालः वर्ष 1875 में, महान साहित्यकार बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने जब यह कविता लिखी थी, तब शायद उन्होंने भी नहीं सोचा होगा कि उनकी यह रचना आने वाले समय में देश की आजादी की सबसे बड़ी पहचान बन जाएगी। बंगाल के एक छोटे से कोने में जन्मा यह गीत जल्द ही पूरे उपमहाद्वीप की जुबान पर था। 'वंदे मातरम्' का उद्घोष ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ हर विरोध, हर आंदोलन और हर बलिदान का केंद्रीय नारा बन गया। जब-जब किसी क्रांतिकारी ने अंग्रेजों के अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई, उसके होंठों पर और उसके दिल में 'वंदे मातरम्' की पवित्र ध्वनि गूँज रही थी। यह गीत हर भारतीय के लिए मात्र एक शब्द नहीं, बल्कि मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम और आस्था की अभिव्यक्ति बन गया। इस गीत को अमरता तब मिली जब 1896 के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने इसे पहली बार सुरों में पिरोया। उस क्षण, सभा में मौजूद हर व्यक्ति की आँखें नम थीं, और उन्हें लगा जैसे साक्षात भारत माता स्वयं उन्हें पुकार रही हों – 'वंदे मातरम्'। यही पुकार बाद में आजादी की लड़ाई का सबसे शक्तिशाली नारा बनी। अंडमान की जेलों में बंद क्रांतिकारियों से लेकर दूर-दराज के गांव-गांव के युवाओं तक, यह गीत उनके दिलों में आशा, बलिदान और जोश की ज्वाला बन गया। इसने लाखों लोगों को हँसते-हँसते फाँसी के फंदे को चूमने की प्रेरणा दी। अब, 150 साल बाद, वही 'वंदे मातरम्' फिर से देश को एक नई ऊर्जा और दिशा दे रहा है। देश भर में दिल्ली से लेकर कोलकाता, मुंबई से लेकर चेन्नई तक हर शहर और हर कस्बे में भव्य कार्यक्रम आयोजित किए गए। स्कूलों में बच्चों ने सामूहिक रूप से सुरों में माँ भारती को नमन किया। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर युवाओं ने अपनी रचनात्मकता के माध्यम से इस गीत के महत्व को साझा किया। तेजी से बदलते इस डिजिटल और आधुनिकता की दौड़ में, जहाँ लोग भौतिक सफलता और वैश्विक पहचान की ओर अग्रसर हैं, 'वंदे मातरम्' हमें हमारी जड़ों, हमारी मिट्टी और हमारी असली पहचान से जोड़े रखता है। यह गीत केवल इतिहास का एक पन्ना नहीं, बल्कि हमारी राष्ट्रीय आत्मा की अविरल आवाज है। आज जब देश आत्मनिर्भर भारत, डिजिटल इंडिया और विश्वगुरु बनने की दिशा में ऐतिहासिक कदम बढ़ा रहा है, तब 'वंदे मातरम्' हमें यह बोध कराता है कि सच्ची तरक्की केवल आर्थिक प्रगति में नहीं है, बल्कि राष्ट्र के प्रति प्रेम, समर्पण और सांस्कृतिक मूल्यों की भावना के जीवित रहने में है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

अमीरी में अभिवृद्धि

गरीबी उन्मूलन के प्रयास और असंतोष

ललित गर्ग

विश्व अर्थव्यवस्था पर किए गए हालिया अध्ययन, विशेषकर जी-20 पैनल की रिपोर्ट, ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि धन और संपत्ति के वितरण में असमानता अब चरम पर पहुंच चुकी है। यह असमानता केवल आर्थिक नहीं, बल्कि एक गंभीर नैतिक, सामाजिक और मानवीय संकट का भी संकेत है। यह ऐसी त्रासद स्थिति है जिसमें एक तरफ लोग मूलभूत सुविधाओं के अभाव में सड़कों पर उतर रहे हैं, तो दूसरी ओर अमीर से और अमीर होते लोगों की विलासिता के किस्से तमाम हैं। उदारीकरण व वैश्वीकरण के दौर के बाद पूरी दुनिया में आर्थिक असमानता रूकने का नाम नहीं ले रही है, जिससे एक बड़ी आबादी में विद्रोह एवं क्रांति के स्वर उभर रहे हैं।

आँकड़ों की भयावह तस्वीर

रिपोर्ट के अनुसार, आज दुनिया की नई बनी संपत्तियों का लगभग 63 प्रतिशत हिस्सा मात्र एक प्रतिशत अमीर लोगों के पास है, जबकि निचले 50 प्रतिशत गरीब लोगों के हिस्से में केवल एक प्रतिशत संपत्ति आई है। सन-2000 से 2024 के बीच तकनीकी विकास और उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई, लेकिन इस विकास का लाभ समान रूप से नहीं बंटा। सन 2000 में जहाँ विश्व की कुल संपत्ति का 45 प्रतिशत हिस्सा शीर्ष एक प्रतिशत लोगों के पास था, वहीं 2024 तक यह बढ़कर 63 प्रतिशत से भी ऊपर पहुंच गया। निस्संदेह, भारत भी इस भयावह असमानता की स्थिति में अपवाद नहीं है। ऑक्सफैम इंडिया की रिपोर्ट बताती है कि देश के शीर्ष दस प्रतिशत लोगों के पास कुल संपत्ति का लगभग 77 प्रतिशत हिस्सा है, जबकि निचले साठ प्रतिशत लोगों के हिस्से में मात्र 4.7 प्रतिशत संपत्ति आती है। बीते दशक में अरबपतियों की संख्या दोगुनी हो गई, लेकिन मजदूर, किसान और मध्यम वर्ग की आमदनी स्थिर रही या घटी। एक ओर महानगरों में अति उपभोग की चकाचौंध है, तो दूसरी ओर गाँवों और झुग्गियों में रोटी और दवा के लिए संघर्षरत लोग हैं। यह विरोधाभास हमारी विकास यात्रा का सबसे बड़ा प्रश्न बन गया है।

श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन समिति, मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर

सेठ जगन्नाथ कपूरचन्द जैन मेमोरियल ट्रस्ट, झिलाय

दिगम्बर जैन महासमिति, नई दिल्ली

के संयुक्त तत्वावधान में

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप सन्मति जयपुर द्वारा

10 वां निःशुल्क नेत्र जांच, लैंस प्रत्यारोपण एवं रक्तदान शिविर

सम्मान एवं समापन समारोह

सोमवार, 10 नवम्बर 2025
प्रात: 9.00 बजे से

स्थानः श्री आदिनाथ भवन
मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर

दीप प्रज्जवलनकर्ता एवं कम्बल वितरणकर्ता
श्रीमान् कैलाश चंद जी, माणक चंद जी, रमेश जी ठोलिया
प्रमुख समाज सेवी (राम लक्ष्मण जोडी)

मुख्य अतिथि
श्रीमान् सुरेन्द्र कुमार जी पाण्ड्या
राष्ट्रीय महामंत्री, दिगम्बर जैन महासमिति

अध्यक्षता
माननीय न्यायाधिपति श्रीमान् नरेन्द्र कुमार जी जैन
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम हाईकोर्ट

गौरवमय अतिथी
श्रीमान् शैलेंद्र जी गोधा
मुख्य संपादकः दैनिक समाचार जगत

विशिष्ट अतिथि
श्रीमान् महेन्द्र कुमार जी रांवका
प्रमुख समाजसेवी, मानसरोवर

विशिष्ट अतिथि
श्रीमान् संजय जैन छाबड़ा
आवा वाले, प्रमुख समाजसेवी

विशिष्ट अतिथि
डॉ. राजीव जी जैन
उपाध्यक्षः जेएसजी आईएफ नॉर्दन रीजन

विशिष्ट अतिथि
श्रीमान् भागचंद जी बाकलीवाल
प्रमुख समाज सेवी, लांगडियावास वाले

विशिष्ट अतिथि
श्रीमान् महावीर जी कसेरा
प्रमुख समाज सेवी, कसेरा टैंट एंड इवेंट

विशिष्ट अतिथि
श्रीमान् पदम जी बिलाला
प्रांतीय अध्यक्ष- धर्म जाग्रती संघ

शिविर सहयोगी संस्थाए

जैन सोश्यल ग्रुप संगिनी कैपिटल * श्री आदिनाथ फाउण्डेशन, मानसरोवर, जयपुर
आदिनाथ मित्र मंडल, जयपुर * दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप नवकार, जयपुर

वर्ष 2013 से 2023 तक आयोजित 9 शिविरो में लगभग 9200 रोगियों की नेत्र जाँच एवं 1450 नेत्र लैंस प्रत्यारोपण ऑपरेशन डॉ. वीरेन्द्र लेजर, फेको सर्जरी सेन्टर, टोंक रोड, जयपुर पर करवाये गये हैं।

नेत्र जाँच एवं रक्तदान शिविर
शनिवार, 8 नवम्बर 2025 प्रातः 9.00 बजे से 1.00 बजे तक
स्थान : राजकीय बालिका सी.सै. स्कूल, झिलाय, निवाई

झिलाय में 08 नवम्बर को आयोजित शिविर में लैंस प्रत्यारोपण के लिए चयनित रोगी सायं 5.00 बजे दिगम्बर जैन आदिनाथ भवन, मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर लाये जायेंगे।
रोगियों के ऑपरेशन रविवार 9 नवम्बर 2025 को नवीन तकनीक व आधुनिक मशीनों द्वारा डॉ. वीरेन्द्र लेजर, फेको सर्जरी सेन्टर, टोंक रोड, जयपुर पर विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा किये जायेंगे।
सोमवार 10 नवम्बर को प्रात: 11.00 बजे रोगियों को चश्मा, दवाईयां व स्मृति स्वरूप कम्बल देकर वापस बस द्वारा झिलाय भिजवाया जायेगा।

मुख्य समन्वयक	मुख्य समन्वयक	समन्वयक	समन्वयक	समन्वयक	समन्वयक
दर्शन–विनिता बाकलीवाल	राकेश–समता गोदिका	राकेश–रेणू संघी	अनिल–प्रेमा रांवका	नितेश–मीनू पाण्ड्या	राजेन्द्र–कुसुम पाटनी

निवेदक

सेठ जगन्नाथ कपूरचन्द जैन मेमोरियल ट्रस्ट, झिलाय
के. एम. जैन (अध्यक्ष), डॉ. पी. सी. जैन (मंत्री), महावीर प्रसाद जैन (संयोजक), राजेश जैन (संयोजक), जितेन्द्र जैन (संयोजक), प्रहलाद चौधरी (संयोजक)

दिगम्बर जैन महासमिति, नई दिल्ली
डॉ अशोक बडजात्या (इंदौर) राष्ट्रीय अध्यक्ष, सुरेंद्र कुमार जैन पांड्या (जयपुर) राष्ट्रीय महामंत्री

श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन समिति
सुशील कुमार जैन (अध्यक्ष), सुनील बैनाडा (वरिष्ठ उपाध्यक्ष), तेजकरण चौधरी (उपाध्यक्ष), राजेन्द्र कुमार सेठी (मंत्री), मनोज कुमार जैन (संयुक्त मंत्री), लोकेन्द्र कुमार जैन (कोषाध्यक्ष), अशोक कुमार सेठी (संगठन मंत्री), जम्बू कुमार सोगणी (सांस्कृतिक मंत्री)

जैन सोशल ग्रुप संगिनी कैपिटल
अलका – सुधीर गोधा (अध्यक्ष), विनिता–दर्शन बाकलीवाल (संस्थापक अध्यक्ष), सुनीता–सुबोध पाटोदी (सचिव)

श्री आदिनाथ फाउण्डेशन, मानसरोवर
अनिता जैन (प्रमुख न्यासी), नरेश कुमार जैन (प्रबन्ध न्यासी)

आदिनाथ मित्र मंडल, जयपुर
राकेश गोदिका (संरक्षक), सुनील जैन (अध्यक्ष), राजेन्द्र बाकलीवाल (मंत्री), मुकेश जैन (कोषाध्यक्ष), साकेत जैन (संयोजक)

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप नवकार, जयपुर
मोहनलाल गंगवाल (अध्यक्ष), सुरेश जैन बांदीकुई (कार्याध्यक्ष), विजय कुमार पांड्या (सचिव), कैलाश चन्द सेठी (कोषाध्यक्ष)

आयोजक :: दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप सन्मति जयपुर

मनीष–शोभना लोंग्या अध्यक्ष	राकेश–समता गोदिका संस्थापक अध्यक्ष	सुरेन्द–मृदुला पांड्या संरक्षक	दर्शन–विनीता बाकलीवाल संरक्षक	राजेश – जेना गंगवाल संरक्षक	विनोद–शशि तिजारिया संरक्षक	दिनेश–संगीता गंगवाल परामर्शक	राजेश–रानी पाटनी सचिव
राकेश–रेणु संघी वरिष्ठ उपाध्यक्ष	संजय–ज्योति छाबडा वरिष्ठ उपाध्यक्ष	विनोद–हेमा सोगानी उपाध्यक्ष	चक्रेश–पिंकी जैन उपाध्यक्ष	सुनील–सुनीता गोदिका उपाध्यक्ष	अनिल–ज्योति जैन उपाध्यक्ष	अनिल–अनिता जैन संगठन सचिव	नितेश–मीनू पांड्या संगठन सचिव
प्रदीप–प्राची बाकलीवाल संयुक्त सचिव	चंदन–डॉ अनामिका पापड़ीवाल संयुक्त सचिव	कमल–मंजू ठोलिया सांस्कृतिक सचिव	राजेंद्र – कुसुम जैन खेल सचिव	दिलीप–प्रमिला जैन कोषाध्यक्ष	पंकज–नीना जैन कार्यकारिणी सदस्य	राकेश–नीरा लुहाडिया कार्यकारिणी सदस्य	अनिल–प्रेमा रांवका अशोक सेठी विशेष आमंत्रित

मुनिराज श्री 108 मौन सागर जी महाराज का हुआ समाधि मरण

संलेखना से पूर्व अंतिम वचन अब मैं सब कुछ त्याग कर स्वयं में अंतर्ध्यान हो रहा हूं...

सुसनेर (जिला आगर मालवा, म.प्र.)

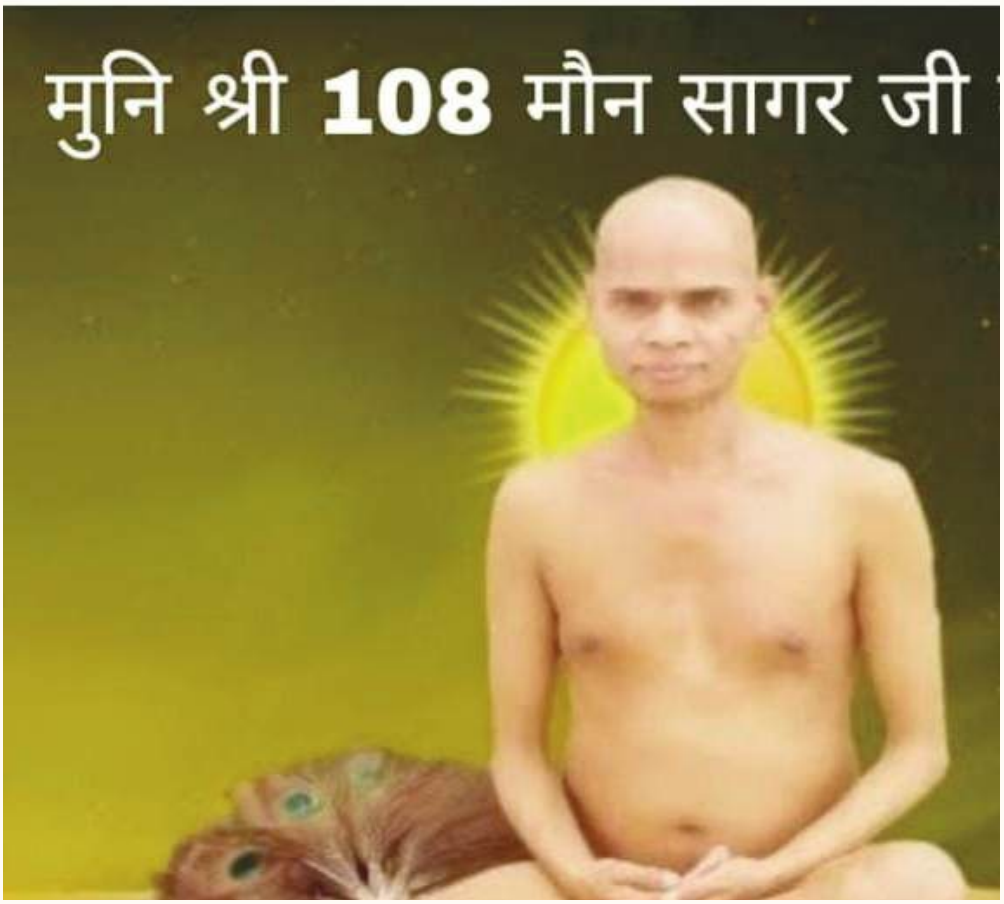

जैन दर्शन का सार है – जीवन को मृत्यु नहीं, बल्कि मोक्ष महोत्सव बनाना। इसी महान परंपरा का निर्वहन करते हुए परम पूज्य क्षपक मुनिराज श्री 108 मौन सागर जी महाराज ने 8 नवंबर 2025, रात्रि 2 बजकर 1 मिनट पर सुसनेर की पावन भूमि पर उत्कृष्ट समाधि प्राप्त की। यह जानकारी सुशील कुमार जैन (भोपाल) ने दी। वे बताते हैं कि समाधिस्थ मुनिराज श्री 108 मौन सागर जी महाराज, मुनि श्री 108 भूतबलि सागर जी के शिष्य एवं संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के आज्ञानुव्रत शिष्य थे।

संलेखना का आरंभ और वैराग्य की राह

मुनिराज श्री मौन सागर जी की अनावृत यम संलेखना 26 अक्टूबर 2025, कार्तिक सुदी पंचमी (रविवार) से सुसनेर (जिला आगर मालवा) में आरंभ हुई थी। यह संलेखना निर्यापक मुनि श्री 108 मुनि सागर जी महाराज के मार्गदर्शन में पूर्ण समता भाव से चल रही थी। सुसनेर में मुनिराज का चातुर्मास जारी था। जैसे-जैसे समय बीतता गया, मुनिराज की तप-साधना गहन होती गई। किसी को आभास तक नहीं हुआ कि वे मोक्षमार्ग की यात्रा की तैयारी कर रहे हैं। चातुर्मास निष्ठापन की बेला पर, 26 अक्टूबर को रविवार के प्रवचन में गुरुदेव ने अपने मंगल आशीर्वचन में कहा... अब मैं मोक्ष मार्ग की और आगे बढ़ रहा हूं, जिस मार्ग पर हमारे आराध्य जिनेन्द्र भगवान और आचार्य परंपरा के साधु-संत जाते आए हैं। मेरे द्वारा जैन धर्म का मूल मर्म – यम संलेखना – धारण किया जा रहा है। यह सुनकर पूरी सभा में सन्नाटा छा गया। उपस्थित श्रावकों ने भावभीने शब्दों में निवेदन किया कि गुरुदेव, आप पूर्णतः स्वस्थ हैं, कृपया अभी संलेखना ग्रहण न करें। परंतु जैसा कि कहा गया है – दिगंबर साधु का वचन पत्थर की लकीर होता है, प्राण जाय पर वचन न जाय। गुरुदेव ने दृढ़ निश्चय के साथ संलेखना व्रत धारण किया।

त्याग और समाधि का अप्रतिम उदाहरण

इसके पश्चात मुनिराज श्री मौन सागर जी महाराज निरंतर वैराग्य पथ पर अग्रसर होते गए। सुसनेर जैन समाज ने उनके दिव्य त्याग और समाधि साधना का प्रत्यक्ष अनुभव किया। वह दृश्य वैसा ही था जैसा आचार्य श्री ज्ञानसागर जी ने आचार्य श्री विद्यासागर जी को पद समर्पित करते हुए समाधि मरण का निश्चय किया था। इसी क्रम में, मुनि श्री मौन सागर जी (जो संघ में वरिष्ठ थे) ने अपने संघ का उत्तरदायित्व मुनि श्री 108 मुनि सागर जी महाराज को सौंपते हुए उन्हें निर्यापक मुनि घोषित किया और स्वयं यम संलेखना धारण की। सुसनेर की यह भूमि पहले भी मुनि समता सागर जी, मुनि मार्दव सागर जी, पूवाचार्य दर्शन सागर जी, आर्यिका पार्श्वमति माताजी एवं क्षुल्लिका मनोमती माताजी की समाधि साधना से पावन हो चुकी है। अब मुनि मौन सागर जी उसी मोक्षमार्ग पर अग्रसर हुए। संलेखना से पूर्व अंतिम वचन: अब मैं सब कुछ त्याग कर स्वयं में अंतर्ध्यान हो रहा हूं। यह केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि जैन दर्शन का जीवंत मर्म है। मुनिराज के जीवन ने यह सिद्ध कर दिया कि प्रभाव शब्दों से नहीं, आचरण से होता है। त्याग का यह सिद्धांत केवल जैन धर्म के लिए नहीं, बल्कि समस्त मानवता के लिए एक आदर्श है कि जीवन के अंत में नहीं, प्रारंभ से ही त्याग के भाव जगाएं, ताकि अंत में हमें त्यागना न पड़े – हम स्वयं त्याग बन जाएं।

गृहस्थ जीवन से मुनि बनने की प्रेरक यात्रा

समाधिस्थ क्षपक मुनि श्री 108 मौन सागर जी महाराज का गृहस्थ नाम देवेन्द्र कुमार था। उनका जन्म 1952 में बेलगाम (कर्नाटक) के बास्तवाड ग्राम में हुआ। पिता का नाम श्रीमंत जी और माता का नाम श्रीमती पद्मावती देवी था, जिनके हाथों में कार्य करने की असमर्थता थी। अतः बचपन से ही देवेन्द्र कुमार घर और कृषि के कार्यों में सहयोग करते थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा ग्राम के शासकीय विद्यालय में हुई। वे प्रारंभ से ही धार्मिक प्रवृत्ति वाले थे। सन् 1988 में जब मुनि भूतबलि सागर जी महाराज का संघ मांगूर (कर्नाटक) से महाराष्ट्र की ओर विहार कर रहा था, तभी देवेन्द्र कुमार के हृदय में वैराग्य का भाव जागा। उन्होंने 1989 में गृहत्याग किया, दो वर्ष बाद ब्रह्मचारी दीक्षा ली, 1994 में ऐलक दीक्षा और 20 अप्रैल 1996 (अक्षय तृतीया) को मुनि दीक्षा धारण कर देवेन्द्र से मुनि मौन सागर जी बने। इसके बाद उन्होंने अपने गुरु के ससंघ के साथ देशभर में धर्मप्रभावना की–1996-2001 महाराष्ट्र, 2002 गुजरात, 2003 छत्तीसगढ़, 2004 उत्तर प्रदेश, 2005 हरियाणा, 2006-2007 मध्यप्रदेश, 2008-2018 पुनः मध्यप्रदेश, 2019 कर्नाटक, 2020 महाराष्ट्र, 2021 मध्यप्रदेश, 2022 राजस्थान, और 2023 से 2025 तक पुनः मध्यप्रदेश में। अंततः उन्होंने 26 अक्टूबर 2025 को सुसनेर (म.प्र.) में यम संलेखना धारण की और 8 नवंबर 2025 को उत्कृष्ट समाधि प्राप्त की।

सल्लेखनाः जैन धर्म की अनादि साधना

आदिकाल से जैन धर्म में सल्लेखना एक पवित्र धार्मिक संस्कार है, जिसमें व्यक्ति स्वेच्छा से भोजन और जल का त्याग कर मृत्यु को शांति और जागरूकता से स्वीकार करता है। इसे समाधि-मरण, संथारा या संन्यास-मरण भी कहा जाता है। इसका उद्देश्य शरीर और कषायों को क्षीण कर आत्म-शुद्धि एवं मोक्ष की प्राप्ति करना है। सल्लेखना शब्द का अर्थ ही है...

सत् (सच्चा) + लेखना (क्षीण करना) अर्थात सम्यक रूप से काया और कषायों को कम करना।

इतिहास में मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ने भी श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में सल्लेखना विधि से देह त्याग किया था।

गौरव का विषय

धन्य है ऐसे महान मुनिराज, और पुण्यशाली है सुसनेर जैन समाज जिन्होंने अपने जीवन में ऐसे दिव्य साधक की संलेखना और उत्कृष्ट समाधि का साक्षात दर्शन किया। पूर्व में जैसे सदी के महान आचार्य श्री 108 शांतिसागर जी मुनिराज ने समाधि प्राप्त की थी, वैसे ही वर्तमान युग में महासाधक क्षपक मुनि श्री 108 मौन सागर जी महाराज ने अपने आचरण से जैन परंपरा को आलोकित किया। ऐसे भावी सिद्ध भगवान मुनिराज के चरणों में त्रिकाल नमोस्तु-नमोस्तु नमोस्तु!

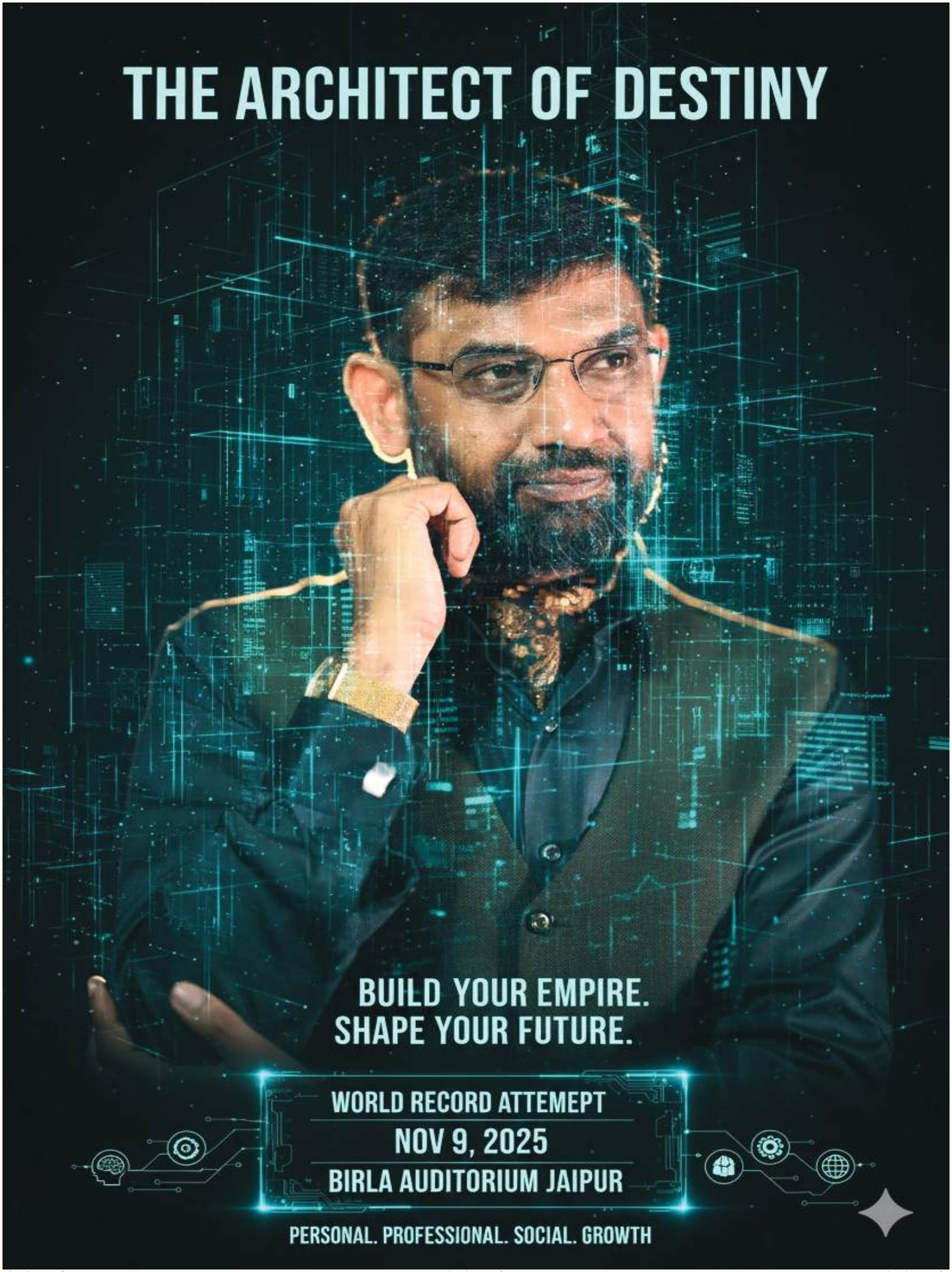
THE ARCHITECT OF DESTINY
BUILD YOUR EMPIRE.
SHAPE YOUR FUTURE.
WORLD RECORD ATTEMEPT
NOV 9, 2025
BIRLA AUDITORIUM JAIPUR
PERSONAL. PROFESSIONAL. SOCIAL. GROWTH

जैन समाज राघौगढ़ के शिष्टमंडल ने लिया आचार्य समय सागर जी का आशीर्वाद

समाज के नव निर्वाचित पदाधिकारियों ने बरगी में की भेंट, धर्म एवं समाज उत्थान के लिए कार्य करने का मिला संदेश

राघौगढ़. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन समाज ट्रस्ट कमेटी राघौगढ़ के शिष्टमंडल ने बरगी (जिला जबलपुर) में ससंघ विराजमान परम पूज्य आचार्य समय सागर जी महाराज ससंघ के दर्शन कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। समाज के मार्गदर्शक मंडल के वरिष्ठ सदस्य विजय कुमार जैन ने बताया कि जैन समाज के नवनिर्वाचित अध्यक्ष अशोक भारिल्ल के नेतृत्व में ट्रस्ट कमेटी के पदाधिकारियों का यह शिष्टमंडल बरगी पहुंचा। वहां उन्होंने आचार्य श्री समय सागर जी महाराज से ससंघ राघौगढ़ पधारने का विनम्र आग्रह किया। शिष्टमंडल ने यह भी निवेदन किया कि गुना नगर में ससंघ विराजमान निर्यापक मुनि योग सागर जी महाराज तथा आरोन नगर में ससंघ विराजमान मुनि दुर्लभ सागर जी महाराज का पावन सान्निध्य राघौगढ़ नगरवासियों को प्राप्त हो, इसके लिए भी कृपा करें। यह उल्लेखनीय है कि राघौगढ़ नगर गौरव युवा मुनि निर्लेप सागर जी महाराज वर्तमान में आचार्य समय सागर जी महाराज के ससंघ में हैं। शिष्टमंडल ने मुनि निर्लेप सागर जी से भी आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्य श्री ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं समस्त कमेटी को आशीर्वाद देते हुए आव्हान किया कि धर्म की रक्षा के साथ समाज की उन्नति और संगठन के सशक्तीकरण हेतु सक्रियता से कार्य करें।

रहली-पटनागंज में भी प्राप्त किया मुनि अभय सागर जी का आशीर्वाद

शिष्टमंडल ने रहली-पटनागंज (जिला सागर) में ससंघ विराजमान निर्यापक मुनि अभय सागर जी महाराज के दर्शन कर उनसे भी आशीर्वाद प्राप्त किया।

बरगी पंचकल्याणक महोत्सव में सक्रिय रहा राघौगढ़ जैन समाज: बरगी में चल रहे पंचकल्याणक महोत्सव में ट्रस्ट कमेटी के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने सहभागिता की। इस दौरान उन्होंने सुप्रसिद्ध चमत्कारी वाम एवं दर्द-निवारक दशाओं का निःशुल्क वितरण भी किया, जिससे श्रद्धालुओं ने लाभ उठाया। **शिष्टमंडल में ये रहे प्रमुख सदस्य:** शिष्टमंडल में मार्गदर्शक मंडल के वरिष्ठ सदस्य विजय कुमार जैन, प्रदीप कुमार जैन, राजेंद्र कुमार जैन, संतोष कुमार जैन बलिया, ट्रस्ट कमेटी के अध्यक्ष अशोक भारिल्ल, उपाध्यक्ष द्वय प्रमोद कुमार चौधरी एवं राजेश कुमार जैन, मंत्री जिनेश कुमार जैन जनता, सहमंत्री अमित जैन रानू, सह कोषाध्यक्ष निखिल जैन राजा चौधरी, जिनेश कुमार रावत, प्रमोद कुमार जैन (सेवानिवृत्त मंडी सचिव), संजीव रावत पप्पू, नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मनीष कुमार जैन अन्ना और आशीष कुमार रावत शामिल थे।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

150 वर्षों से चली आ रही परंपरा का निर्वहन किया

चांदी के रथ में विराजमान होकर नगर विहार पर निकले पारसनाथ भगवान, ऐतिहासिक रहा भव्य रजत रथ यात्रा महोत्सव

सौरभ जैन, पिड़ावा. शाबाश इंडिया

राजस्थान प्रांत की वीर प्रसवनी धरा पर, दक्षिण-पूर्व में स्थित मालवा अंचल से जुड़ी झालावाड़ जिले की धर्मनगरी पिड़ावा में शताब्दियों से चली आ रही परंपरा के अनुसार सकल दिगंबर जैन समाज के तत्वावधान में भगवान पारसनाथ की भव्य रजत रथ यात्रा महोत्सव बड़े ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ निकाली गई। नगर में विराजमान उपाध्याय 108 श्री विकसंत सागर महाराज ससंघ, विभोर सागर महाराज एवं आर्यिका 105 चिन्मयमति माताजी ससंघ के पावन सान्निध्य में पिड़ावा धर्मनगरी में द्वितीय रजत रथ यात्रा महोत्सव उत्साहपूर्वक एवं आनंदमय वातावरण में संपन्न हुआ। द्वितीय रजत रथ यात्रा में भगवान पारसनाथ दो मंजिला चांदी के रथ में विराजमान होकर नगर विहार करते हुए सूरजकुंड स्थित ब्रह्मानंद सागर नसिया पहुंचे। नयापुरा चबूतरे पर महाराज श्री एवं माताजी के मंगल प्रवचन हुए। रथ यात्रा महोत्सव को भव्य और आकर्षक बनाने के लिए यात्रा मार्ग को विशेष रूप से सजाया गया था। जगह-जगह होर्डिंग्स और स्वागत द्वार लगाए गए। स्थानीय समाजबंधुओं के साथ-साथ बाहर से पधारे मेहमानों के लिए वात्सल्य भोज का भी आयोजन किया गया। भक्तिमय रजत रथ यात्रा में आकर्षण का केंद्र रहे युवा, आनंद से झूमे श्रद्धालु भव्य भक्तिमय रथ यात्रा महोत्सव में पिड़ावा के संगीतकार अभिनंद प्रेमी, शुभम जैन और अर्पित जैन ने मनमोहक भजनों की प्रस्तुति दी। मध्यप्रदेश के सुप्रसिद्ध भारत बैंड बड़नगर द्वारा संगीतमय भजनों की प्रस्तुति पर युवक झूमते रहे। रथ यात्रा में समस्त युवा वर्ग ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पूरे नगर में युवाओं की टोलियां नृत्य करती हुई यात्रा का आनंद लेती दिखाई दीं। भव्य आयोजन से पूर्व सकल दिगंबर जैन समाज द्वारा महीनों पहले से तैयारियां शुरू कर दी गई थीं। मुख्य मार्गों को आकर्षक सजावट से सजाया गया जिससे संपूर्ण नगर धार्मिक रंग में रंग गया। गुरु ब्रह्मानंद सागर जी महाराज की प्रेरणा से श्रावकों द्वारा खींचा जाने लगा रथ धर्मनगरी पिड़ावा में यह रथ यात्रा लगभग 150 वर्षों से निरंतर निकल रही है। लगभग 20 वर्ष पूर्व तक रथ को बैलों द्वारा खींचा जाता था, किंतु ब्रह्मानंद सागर जी महाराज के चातुर्मास के दौरान उन्होंने बैलों से रथ खिंचवाना जीवों को सताने वाला कार्य बताते हुए समाज को संकल्प दिलाया कि अब से रथ श्रावकों द्वारा अपने हाथों से खींचा जाएगा। तब से यह परंपरा निरंतर निभाई जा रही है और आज भी रथ को श्रद्धालु हाथों से खींचते हैं। समाज के बुजुर्ग बताते हैं कि हर वर्ष सावन के चार माह बाद, अगहन मास में तथा संतों के चातुर्मास उपरांत भगवान का नगर भ्रमण कराया जाता है। नगर भ्रमण के बाद सूरजकुंड पर भगवान की पूजन एवं कलश विधि संपन्न की जाती है।

प्रशासन रहा मुस्तैद

नगर की शान बनी इस भव्य रजत रथ यात्रा के दौरान मौसम अनुकूल रहा तथा प्रशासन और पुलिस विभाग पूर्णतः मुस्तैद रहे। रथ यात्रा के पूरे मार्ग पर चप्पे-चप्पे पर पुलिसकर्मियों की तैनाती की गई थी। इस दौरान डिप्टी सुनली कुमार सहित विभिन्न स्थानों से अतिरिक्त जाप्ता तैनात किया गया ताकि रथ यात्रा शांतिपूर्वक एवं सफलतापूर्वक संपन्न हो सके।

जब व्यक्ति असमर्थ होकर संसार से थक जाता है, तब उसके भीतर भक्ति जागती है: राष्ट्रसंत मुनिपुंगव श्री सुधासागरजी महाराज

दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी में चल रही विशाल धर्मसभा में प्रतिदिन हो रही है जगत कल्याण के लिए शांति धारा

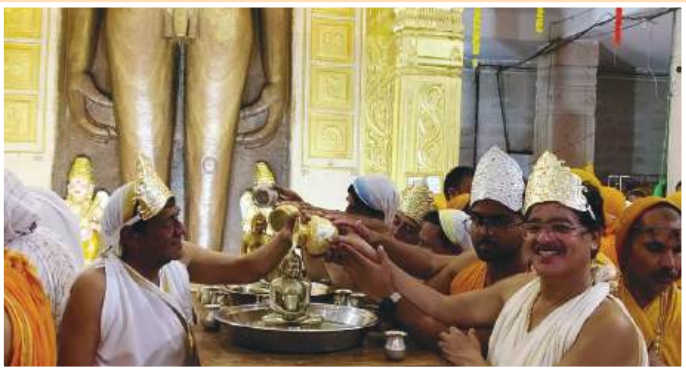

थूवोनजी. शाबाश इंडिया

राष्ट्रसंत मुनिपुंगव श्री सुधासागरजी महाराज ने कहा कि जब व्यक्ति संसार के कष्टों और असमर्थताओं से थक जाता है, तब उसके भीतर भक्ति का भाव जागृत होता है। जब उसे जीवन में कोई मार्ग दिखाई नहीं देता, तब उसके मन में भगवान और गुरुओं के प्रति श्रद्धा प्रकट होती है। महाराजश्री ने कहा कि भक्ति इसलिए जागती है क्योंकि व्यक्ति समझ जाता है कि अब संसार से बचाने वाला कोई मार्ग है तो वह केवल भगवान की भक्ति है। भक्ति मनुष्य के भीतर प्रेम, करुणा और दया का संचार करती है। वे दर्शनोदय तीर्थ, थूवोनजी में आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित कर रहे थे। **14-15 नवंबर को श्री सुधासागर प्रीमियर लीग का आयोजन:** समारोह में दर्शनोदय तीर्थ थूवोनजी कमेटी के प्रचार मंत्री विजय धुर्रा ने बताया कि परम पूज्य निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव श्री सुधासागरजी महाराज के सान्निध्य में संपन्न चक्रवर्ती यात्रा की स्मृति को बनाए रखने हेतु तीर्थ भूमि पर श्री सुधासागर प्रीमियर लीग का आयोजन 14 और 15 नवंबर को किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में देशभर की तीर्थक्षेत्र समितियों की 20 चयनित टीमें भाग लेंगी, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में विजेता बनकर योग्यता प्राप्त की है। दो दिनों तक चलने वाले इस आयोजन में अंतिम चार टीमें सेमीफाइनल में पहुंचेंगी और फाइनल मुकाबला 15 नवंबर की दोपहर खेला जाएगा। शाम को जिज्ञासा समाधान सत्र के दौरान सभी टीमों को क्षेत्र समिति की ओर से सम्मानित किया जाएगा। इस अवसर पर समिति अध्यक्ष अशोक जैन टींगू मिल, महामंत्री मनोज भैसरवास, कोषाध्यक्ष प्रमोद मंगलदीप, मंत्री शैलेंद्र दद्दा, राजेंद्र हलवाई, प्रदीप रानी, जैन समाज के मंत्री शैलेन्द्र श्रागर, मीडिया प्रभारी अरविंद कचनार सहित अन्य गणमान्य उपस्थित रहे। सभी ने एसएसपीएल लीग के सफल आयोजन हेतु परम पूज्य मुनिश्री को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

बीमारी में व्यक्ति कुछ भी करने को तैयार रहता है: मुनिश्री सुधासागर

मुनिश्री ने कहा कि बीमारी में व्यक्ति कुछ भी करने को तैयार हो जाता है, लेकिन स्वस्थ होते ही भूल जाता है। पहले के समय में रोगी को औषध दी जाती थी, जो रोग को जड़ से समाप्त करती थी। आज दवाइयाँ केवल रोग को दबाती हैं, समाप्त नहीं करतीं, इसलिए वह पुनः उभर आता है। उन्होंने कहा वैद्य शत्रु-मित्र का भेद नहीं करता। मेरा कोई शत्रु नहीं है, जो मुझे विनाश कर दे। आध्यात्मिक व्यक्ति कहता है – मेरा कोई दुश्मन नहीं है, क्योंकि मुझे कोई मार ही नहीं सकता। राजा श्रेणिक ने जब यशोधर मुनि के गले में सर्प डाला, तब भी मुनिश्री ध्यान में स्थित रहे – यह है आत्मबल। व्यक्ति के सामान्य गुणों को कोई नहीं ढक सकता। मुनिश्री ने कहा कि दुश्मन आपके विशेष गुणों को ढक सकता है, लेकिन आपके सामान्य गुणों को कोई नहीं छिपा सकता। **चिंतन करो:** मैं अस्तिमान हूं, अर्थात मैं आत्मस्वरूप हूं। आज सबसे बड़ी समस्या यही है कि मनुष्य स्वयं को पहचान नहीं पा रहा। उन्होंने कहा कि आजकल ध्यान बहुत लोकप्रिय हो गया है, परंतु अधिकांश लोगों को ध्यान की सही विधि का ज्ञान नहीं है। वे ध्यान उस पर कर रहे हैं जो बाहर विद्यमान है, जबकि ध्यान स्वयं पर किया जाता है। यह सुनने में सरल है, पर करने में अत्यंत कठिन। **हमें भयभीत नहीं होना चाहिए:** मुनिश्री ने कहा कि आप अपने वास्तविक गुणों को जानिए। आज हर व्यक्ति धन कमा रहा है, व्यापार कर रहा है, फिर भी भीतर भय है कि कल धंधा नहीं चलेगा। जैसे धनवान को धन का भय रहता है, वैसे ही साधु को भय रहता है कि वृद्धावस्था में उसका ज्ञान टिकेगा या नहीं। यह भय स्वाभाविक है, लेकिन इससे डरना नहीं चाहिए। उन्होंने श्रद्धालुओं से कहा कि भयमुक्त होकर कर्म करें, भक्ति करें और आत्मबल को पहचानें क्योंकि भक्ति ही वह मार्ग है जो संसार से मुक्ति की ओर ले जाता है।

जब राग बोले और सुर मुस्कराए: पं. उल्हास कशालकर ने अनहद को किया आलोकित

राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में स्वरों के कलकल नाद ने संगीत-रसीकों को किया सराबोर

जयपुर. शाबाश इंडिया। अनहद की सुरमयी संध्या उस क्षण अनंत हो उठी जब पंडित उल्हास कशालकर के स्वरों ने रागों में प्राण फूँक दिए। उनके गायन में ग्वालियर की गहराई, जयपुर की विस्तारशीलता और आगरा की दृढ़ता एक साथ झिलमिलाई। स्वर कभी ध्यान बनकर ठहरते, कभी भावना बनकर बहते – और श्रोताओं को ऐसी आत्मिक अनुभूति देते चले गए जैसे संगीत स्वयं साधना बन गया हो। **रागों की रस-धारा से सराबोर हुई अनहद की संध्या:** स्पिकमैके और राजस्थान पर्यटन विभाग, राजस्थान सरकार के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार शाम राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित अनहद श्रृंखला की तीसरी कड़ी में पं. कशालकर ने अपनी विलक्षण प्रस्तुति से रागों की रस-धारा प्रवाहित कर दी। सायंकालीन और रात्रि के प्रथम प्रहर के रागों में उन्होंने जिस सौंदर्य का संचार किया, उसने वातावरण को माधुर्य और ध्यानमग्नता से भर दिया। **राग ललिता गौरी से हुआ सुरों का आरंभ:** कार्यक्रम की शुरूआत उन्होंने राग ललिता गौरी से की – यह पूर्वी थाट से संबंधित एक विशिष्ट हिंदुस्तानी शास्त्रीय राग है, जो राग ललित और गौरी का संयोजन है। इस राग में प्राकृतिक और तीव्र म (मध्यम) के साथ-साथ प (पंचम) का प्रयोग होता है। इस राग में पंडित कशालकर ने जयपुर घराने की बंदिश प्रीतम सैयाँ दरस दिखा को तीनताल में निबद्ध कर प्रस्तुत किया, जिसमें राग की कोमलता और आलाप की गहराई ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

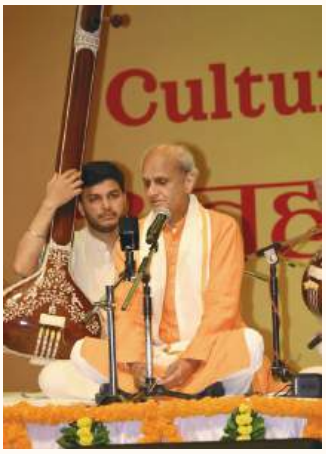

राग भोपाली में स्वर और भाव का अद्भुत संगम: इसके बाद उन्होंने रात्रि के प्रथम प्रहर में गाए जाने वाले कल्याण थाट के राग भोपाली में बंदिश जब से तुम्हीं संग लागे को तीनताल में प्रस्तुत किया। इस प्रस्तुति में उनकी तानकारी की दृढ़ता और स्वर की पारदर्शिता ने राग के भाव को अद्भुत निखार दिया। **परंपरा और नव्यता का संतुलन:** पंडित कशालकर के गायन में परंपरा की गरिमा और नवीनता की कोमल आभा एक साथ झलकी। रागों के विस्तार में जहाँ तान की दृढ़ता थी, वहीं भाव की सूक्ष्मता और स्वर की कोमलता का अनुपम संगम भी दिखाई दिया। ग्वालियर घराने की शास्त्रीयता, जयपुर की जटिल रचनात्मकता और आगरा की ऊर्जा उनके स्वरों में सहजता से गुंथी रही। **तबले पर विनोद लेले और हारमोनियम पर विनय मिश्रा की संगत:** इस अवसर पर तबले पर पंडित विनोद लेले और हारमोनियम पर विनय मिश्रा ने संगत की, जिन्होंने अपनी संगत से प्रस्तुति को और अधिक सजीवता प्रदान की। दोनों की जुगलबंदी ने रागों की सूक्ष्म छवियों को और अधिक निखार दिया। **मूल रूप से अश्विनी भिड़े-देशपांडे को था आमंत्रण:** स्पिकमैके की प्रवक्ता अनु चंडोक और हिमानी खींची ने बताया कि इस संध्या में मूलतः मुंबई की प्रख्यात गायिका डॉ. अश्विनी भिड़े-देशपांडे की प्रस्तुति निर्धारित थी, किंतु पारिवारिक आकस्मिक कारणोंवश वे कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं हो सकीं। ऐसे में पं. उल्हास कशालकर ने अपनी उपस्थिति और प्रस्तुति से कार्यक्रम को विशेष बना दिया। **संगीत की साधना से भरा अनहद का यह क्षण:** पंडित कशालकर की प्रस्तुति ने अनहद के नाम को सच अर्थों में सार्थक किया कि जहां हर राग ने अपनी आत्मा से संवाद किया, और हर स्वर ने मौन को संगीत में परिवर्तित कर दिया। यह संध्या संगीत-रसिकों के लिए एक अविस्मरणीय, आत्मा को छू जाने वाली अनुभूति बन गई जहाँ सुर बोले, राग मुस्कराए और श्रोताओं का मन साधना में डूब गया।

महावीर इंटरनेशनल के सेवा कार्यों से आमजन को कराया अवगत

महावीर इंटरनेशनल अजयमेरु के पदाधिकारियों ने पदमपुरा जैन मंदिर के भव्य निर्माण कार्यों की सराहना की

अजमेर (रोहित जैन). शाबाश इंडिया

महावीर इंटरनेशनल अजयमेरु के पदाधिकारियों ने आज बाड़ा पदमपुरा, जयपुर सहित बड़ के बालाजी और आसपास के जैन मंदिरों के दर्शन किए। इस दौरान उन्होंने श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा (बाड़ा) में चल रहे भव्य निर्माण कार्यों का अवलोकन किया और इसकी प्रशंसा की। महावीर इंटरनेशनल के डिप्टी डायरेक्टर (मीडिया, प्रचार-प्रसार) कमल गंगवाल तथा अजयमेरु के उपाध्यक्ष विजय पांड्या ने जानकारी दी कि श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा (बाड़ा), जयपुर में वात्सल्य वारिधि, जिनधर्म प्रभावक, राष्ट्रगौरव परम पूज्य आचार्यरत्न 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में खड्गासन चौबीसी का भव्यातिभव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं नवनिर्मित शिखर शुद्धि एवं ध्वज कलशारोहण समारोह का आयोजन बुधवार, 18 फरवरी से रविवार, 22 फरवरी 2026 तक किया जाएगा। इस पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में महावीर इंटरनेशनल अजयमेरु के पदाधिकारी भी भाग लेंगे और संघ के सान्निध्य में विविध धार्मिक कार्यक्रमों में सम्मिलित होंगे। **सेवा कार्यों की जानकारी दी:** इस अवसर पर महावीर इंटरनेशनल द्वारा किए जा रहे विभिन्न सामाजिक एवं मानवीय सेवा कार्यों के बारे में आमजन को अवगत कराया गया। संस्था की ओर से समाजसेवा, रक्तदान, शिक्षा सहयोग, पर्यावरण संवर्धन, और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की भी चर्चा की गई। **उपस्थित रहे पदाधिकारी:** इस अवसर पर कमल गंगवाल (डिप्टी डायरेक्टर, मीडिया प्रचार-प्रसार), विजय पांड्या (उपाध्यक्ष, अजयमेरु), मोना जैन, रूबी जैन, और देवर्ष गंगवाल सहित कई सदस्य उपस्थित रहे।

पूज्य आचार्य श्री के 54वें आचार्य पदारोहण वर्ष पर...

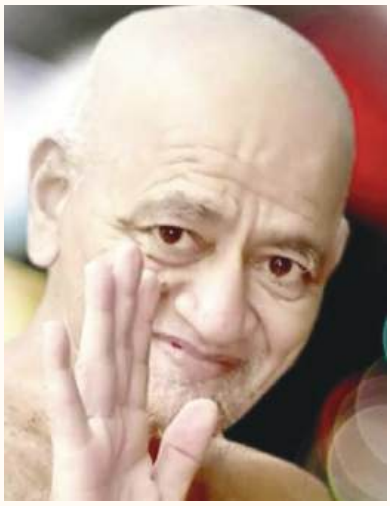

इंजी. अरुण कुमार जैन

आचार्य पदारोहण के वे पल,

मन में स्वतः उभर आए –
गुरु आचार्य श्री ज्ञानसागर,
जब इन श्रीचरणों में आए।

दिया सहारा, किया संवारा,

पल-पल जिन श्री गुरुवर ने,
विद्याधर को पूज्य और वंदनीय बनाया गुरुवर ने।

ग्राम सदलगा के श्रावक को,
जग का प्यारा बना दिया –
आकिंचन सी एक पदरज को,
हर मस्तक का गौरव बना दिया।

चार वर्ष में चार गति का,

ज्ञान कराया, निष्णात किया –
चारों योग पढ़ाकर उनको,
जीवन में भी समा दिया।

दैदीप्य बनाया श्रीकंचन सा,
कैलाश-शिखर साकार किया –
फिर उन चरणों में आकर के,
अपना मस्तक झुका दिया।

पूज्य श्री की अनुकंपा से,

सल्लेखना पूरी कारवाई –
निर्मल, पावन, श्रेष्ठ आत्मा,
समवसरण श्रीगति पाई।

संघ बनाया शनैः शनैः,
पग-पग कदम बढ़ाए थे –
मरुभूमि से बुंदेलखंड आ,
तप-साधना की सुरभि फैलाए थे।

तरुण तपस्वी, श्रेष्ठ साधना,
चतुर्विध संघ बना डाला –
विश्व-वंदनीय, पूज्य, श्रेष्ठ,
अनुपम श्रीसंघ रच डाला।

एक सहस्त्र से अधिक तरुण,
युवा संग संघ में आए –
कोटि जनों ने सद्पथ पाया,
फिर से सतयुग पृथ्वी पर लाए।

समवसरण में सभी गति के,

सभी प्राणी संग-संग आए –
जंगल, अटवी, निर्जन तीर्थ,
भव्य बने, वैभव पाए।

कुंडलपुर, मडियाजी, रामटेक,
नेमावर का भाग्योदय मुस्काया –
प्रतिभास्थली, श्रमदान, दयोदय,
पूणार्यू आदि ने गौरव पाया।

कर, नयन, अधर, वाणी, पदरज से,

कोटि आशीष जग ने पाया –
54वें आचार्य पदारोहण वर्ष ने,
पावन स्मृतियाँ पुनः दिलाया।

मन, नयन, देह और रोम-रोम में,
दिव्य परम सुख हमने पाया –
सीमंधर स्वामी समवसरण से,
गुरुवर का आशीष हमने पाया।

द्रवित नयन कोटि जनों के,

कोटि नमन नित्य स्वीकारें –
जहाँ विराजें, नित आशीष दें,
हम सबको पथ-दर्शन प्रदान करें।

संपर्क:
अमृता हॉस्पिटल, सेक्टर-88, फरीदाबाद (हरियाणा) मोबाइल: 7999469175

बैंक ऑफ बड़ौदा के लिए विशेष प्री-लिटिगेशन लोक अदालत का आयोजन

आपसी समझाइश से निपटे चार प्रकरण, 105 मामलों पर हुई सुनवाई

नसीराबाद (रोहित जैन)

माननीय राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अजमेर के निदेर्शानुसार दिनांक 8 नवंबर 2025 (शनिवार) को न्यायालय परिसर में तालुका विधिक सेवा समिति, नसीराबाद द्वारा बैंक ऑफ बड़ौदा के लिए विशेष प्री-लिटिगेशन लोक अदालत का आयोजन किया गया। इस विशेष लोक अदालत में पक्षकारों के मध्य आपसी समझाइश से बैंक ऑफ बड़ौदा की विभिन्न शाखाओं के कुल चार प्रकरणों का सफलतापूर्वक निस्तारण किया गया। **न्यायिक अधिकारी महावीर सैनी की अध्यक्षता में**

गठित हुई बेंच: तालुका सचिव ताराचंद खाती ने जानकारी दी कि इस विशेष लोक अदालत के लिए नसीराबाद में एक प्रो-बोनो लोक अदालत बेंच का गठन किया गया। इस बेंच की अध्यक्षता न्यायिक अधिकारी महावीर सैनी (सिविल न्यायाधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट) ने की, जबकि पैनल अधिवक्ता धर्मेन्द्र जैन को सदस्य के रूप में शामिल किया गया। इस बेंच के समक्ष बैंक ऑफ बड़ौदा के प्री-लिटिगेशन के 04 प्रकरणों का निस्तारण किया गया, जो आपसी सहमति एवं समाधान के आधार पर समाप्त हुए। **चार शाखाओं के कुल 105 प्रकरण रखे गए:** इस विशेष लोक अदालत में नसीराबाद क्षेत्र की बैंक ऑफ बड़ौदा की चार शाखाओं-रामसर, बीर, राजगढ़ एवं नसीराबाद – से संबंधित कुल 105 प्रकरण विचारार्थ रखे गए। इनमें से चार मामलों का निपटारा आपसी सहमति से किया गया, जबकि शेष प्रकरणों पर सुनवाई की प्रक्रिया आगे बढ़ाई गई। **अधिकारी एवं कर्मचारी रहे उपस्थित:** कार्यक्रम के दौरान तालुका सचिव ताराचंद खाती, पैनल अधिवक्ता धर्मेन्द्र जैन, न्यायिक कर्मचारी विजेन्द्र पाल सिंह राठौड़, पदमसिंह राठौड़, शिवराज आदि उपस्थित रहे। सभी ने इस पहल को विवाद निपटान का प्रभावी माध्यम बताते हुए कहा कि इस प्रकार की लोक अदालतें समाज में सौहार्द और त्वरित न्याय की दिशा में सार्थक कदम हैं।

दीपावली मिलन समारोह संपन्न

श्रीमाल जैन समाज संस्था कोटा ने हर्षोल्लास से मनाया दीपोत्सव

कोटा. शाबाश इंडिया। श्रीमाल जैन समाज संस्था, कोटा द्वारा श्री दिगंबर जैन मंदिर, तलवंडी सेक्टर-अ में दीपावली मिलन समारोह हर्षोल्लास और मंगलमय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री धर्मचंद जैन शाह (सीए), विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अशोक पहाड़िया और श्री प्रकाशचंद सामरिया उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री राजेंद्र जैन श्रीमाल (नैनवां वाले) ने की। **महिलाओं द्वारा गेम्स प्रतियोगिता और सम्मान समारोह:** कार्यक्रम में महिलाओं द्वारा मनोरंजक गेम्स प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनके विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। मंगल वाचन अभिषेक भैया जी द्वारा किया गया। पूर्व महासचिव एवं समाज के अग्रणी श्री शिखर चंद जैन ने समाज की एकजुटता की आवश्यकता और वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता पर सारगर्भित विचार रखे। समारोह में तप और उपवास करने वाले समाजजनों सहित मेधावी व्यक्तियों और बच्चों को सम्मानित किया गया। **कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण और आभार प्रदर्शन:** कार्यक्रम के अंत में नवनिर्वाचित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी पारस जैन 'पार्श्वमणि' (पत्रकार) ने बताया कि कार्यक्रम के समापन पर अध्यक्ष श्री राजेंद्र जैन श्रीमाल (नैनवां वाले), महासचिव श्री संजय जैन (बगलाई वाले) और कोषाध्यक्ष श्री अमित जैन ने सभी अतिथियों और समाजबंधुओं का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन श्री धर्मेश जैन ने किया। समारोह के उपरांत सभी ने वात्सल्य भोज का आनंद लिया।

भगवान के माता-पिता बने अशोक-शकुन्तला चांदवाड़

जयपुर. शाबाश इंडिया

अखिल भारतवर्षीय धर्म जागृति संस्थान, प्रांत राजस्थान के संरक्षक श्रेष्ठी अशोक-शकुन्तला चांदवाड़ को कीर्तिनगर, जयपुर में 9 नवंबर से आरंभ होने वाले पंचकल्याणक महोत्सव में भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इस उपलक्ष्य में शुक्रवार रात्रि थड़ी मार्केट, जयपुर में भव्य संगीतमय गोद भराई समारोह आयोजित हुआ। कार्यक्रम में थड़ी मार्केट जैन समाज और धर्म जागृति संस्थान की ओर से अशोक-शकुन्तला चांदवाड़ का माला, शाल और दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया गया तथा पंचमेवों के थाल से गोद भराई की गई। संस्थान की ओर से प्रांतीय अध्यक्ष पदम जैन बिलाला, संरक्षक राकेश माधोराजपुरा, कोषाध्यक्ष पंकज लुहाड़िया, महेश काला, पवन जैन, नरेन जैन, भंवरी जैन, नीता जैन, प्रिया अंकित चांदवाड़ और निकिता लुहाड़िया सहित कई पदाधिकारी उपस्थित रहे। समारोह में भक्ति, उल्लास और सौहार्द का अद्भुत वातावरण रहा।

दिगंबर जैन सोशल ग्रुप सन्मति द्वारा नेत्र जांच एवं रक्तदान शिविर का आयोजन

150 रोगियों का होगा नेत्र लेंस प्रत्यारोपण, रक्तदान शिविर में 90 यूनिट रक्त एकत्र

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन सोशल ग्रुप सन्मति द्वारा श्री दिगंबर जैन समिति, सेठ जगन्नाथ कपूरचंद जैन मेमोरियल ट्रस्ट, झिलाई तथा दिगंबर जैन महासमिति, नई दिल्ली के तत्वावधान में रक्तदान शिविर एवं नेत्र जांच शिविर का आयोजन शनिवार, 8 नवंबर को ग्राम झिलाई, तहसील निवाई, जिला टोंक (राजस्थान) में किया गया। ट्रस्ट के मंत्री डॉ. पी.सी. जैन ने बताया कि रक्तदान शिविर में 90 यूनिट रक्त एकत्र किया गया। वहीं, नेत्र जांच शिविर में डॉ. वीरेंद्र अग्रवाल फेको सर्जरी सेंटर, जयपुर की विशेषज्ञ टीम द्वारा 150 रोगियों की जांच कर उन्हें नेत्र लेंस प्रत्यारोपण के लिए चयनित किया गया। **चयनित रोगियों का जयपुर में प्रवास और लेंस प्रत्यारोपण:** मुख्य समन्वयक दर्शन-विनीता जैन बाकलीवाल ने बताया कि चयनित सभी रोगियों का प्रवास श्री आदिनाथ भवन, मीरा मार्ग, जयपुर पर रहेगा। ट्रस्ट के राजेश जैन के अनुसार, सभी रोगियों का आज (रविवार) डॉ. वीरेंद्र लेजर फेको सर्जरी सेंटर, जयपुर पर अत्याधुनिक तकनीक से लेंस प्रत्यारोपण किया जाएगा। सन्मति ग्रुप के अध्यक्ष मनीष-शोभना लोंग्या एवं सचिव राजेश-रानी पाटनी ने बताया कि शिविर के सफल संचालन हेतु राकेश-रेनू संघी, अनिल-प्रेमा रावका, नितेश-मीनू पांड्या और राजेंद्र-कुसुम पाटनी को समन्वयक नियुक्त किया गया है। **10 नवंबर को होगा समापन एवं सम्मान समारोह:** मुख्य समन्वयक दर्शन बाकलीवाल तथा राकेश-समता गोदिका ने बताया कि शिविर का समापन एवं सम्मान समारोह सोमवार, 10 नवंबर को प्रातः 9 बजे श्री आदिनाथ भवन, मीरा मार्ग, जयपुर पर आयोजित होगा। समारोह में दीप प्रज्वलनकर्ता एवं कंबल वितरणकर्ता के रूप में श्रेष्ठी कैलाशचंद, मानकचंद एवं रमेश ठोलिया परिवार होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सिक्किम हाईकोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश नरेंद्र कुमार जैन करेंगे, जबकि मुख्य अतिथि होंगे दिगंबर जैन महासमिति के राष्ट्रीय महामंत्री सुरेंद्र कुमार जैन पांड्या। गौरवमय अतिथि के रूप में दैनिक समाचार जगत के मुख्य संपादक शैलेन्द्र गोधा पधारेंगे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथियों में श्रेष्ठी महेन्द्र रावका, संजय जैन (छाबड़ा आवा वाले), पदम बिलाला, डॉ. राजीव जैन, महावीर कसेरा, कसेरा टेंट एंड इवेंट, तथा भागचंद बाकलीवाल शामिल होंगे। **सहयोगी संस्थाएं:** कार्यक्रम की मुख्य सहयोगी संस्थाएं होंगी दिगंबर जैन सोशल ग्रुप नवकार, जैन सोशल ग्रुप केपिटल संगिनी फोरम, आदिनाथ मित्र मंडल सांगानेर, श्री आदिनाथ फाउंडेशन, एवं मानसरोवर ग्रुप।

बोल रे पिच्छी तूने कौन-सा पुण्य किया है...

गूंज में सम्पन्न हुआ भव्य पिच्छिका परिवर्तन समारोह

20 संतों ने बदली पिच्छिका, आचार्य श्री को मिला राज्य अतिथि का दर्जा, रविवार को मनाया जाएगा 50वां अवतरण दिवस

जयपुर. शाबाश इंडिया

आचार्य सुंदर सागर महाराज ससंघ के सान्निध्य में सांगानेर स्थित चित्रकूट कॉलोनी के कंवर का बाग में भव्य पिच्छिका परिवर्तन समारोह बड़े श्रद्धा और उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इससे पूर्व राजस्थान सरकार ने आचार्य सुंदर सागर महाराज को राजकीय अतिथि का दर्जा प्रदान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ चित्र अनावरण, दीप प्रज्ज्वलन एवं भक्ति नृत्य-संगीत के साथ हुआ। श्रावकों ने बोल रे पिच्छी तूने कौन-सा पुण्य किया है और भगवान तेरा बहुत बड़ा अहसान जैसे भावपूर्ण भजनों से वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

आचार्य परंपरा का गौरवपूर्ण क्षण

मंगलाचरण आर्यिका सुरम्यमति माताजी ने किया। देवप्रकाश खंडाका परिवार ने आचार्य श्री के पाद प्रक्षालन का पुण्य अर्जित किया, जबकि कपूरचंद अनुज जैन परिवार ने शास्त्र भेंट किए। इसके बाद 20 संतों की पिच्छिका परिवर्तन की पवित्र प्रक्रिया सम्पन्न हुई। मंच पर आचार्य शशांक सागर मुनिराज ससंघ भी विराजमान रहे।

पिच्छिका परिवर्तन के पुण्य अवसर

आचार्य सुंदर सागर महाराज की पिच्छिका सरदारमल देवप्रकाश खंडाका एवं राजेश गंगवाल परिवार को प्राप्त हुई। मुनि श्रेष्ठ सागर महाराज की पिच्छिका राकेश गंगवाल परिवार को मिली। मुनि सुयश सागर महाराज की पिच्छिका ओमप्रकाश कटारिया परिवार को प्राप्त हुई। मुनि सुलक्ष्य सागर महाराज की पिच्छिका विशाल ठोलिया परिवार को मिली। मुनि सुगम सागर महाराज की पिच्छिका मुकेश सोनी परिवार को प्राप्त हुई। मुनि सुज्ञीय सागर महाराज की पिच्छिका मुकेश जैन निवाई को मिली। मुनि सुज्ञान सागर महाराज की पिच्छिका केवलचंद गंगवाल परिवार को दी गई। इसी प्रकार अन्य मुनियों एवं आर्यिकाओं की पिच्छिकाएं विभिन्न श्रद्धालु परिवारों को भेंट की गईं। आचार्य श्री ने इस अवसर पर कहा कि पिच्छिका संयम का उपकरण है, जो जीवों की रक्षा करती है और संत के लिए अहिंसा का प्रतीक है। यह आत्म संयम और सेवा दोनों का संगम है। **विशाल जुलूस और भक्तिभाव:** इससे पूर्व सभी पिच्छिकाएं महिलाओं द्वारा सिर पर रखकर भव्य जुलूस के रूप में श्री महावीर जैन मंदिर से कंवर का बाग लाई गईं। पूरे आयोजन में भक्तिमय वातावरण और गगनभेदी जय जय गुरुवर सुंदर सागर के जयकारे गूंजते रहे। **आचार्य श्री ने बिना बोली दी पिच्छिका:** आचार्य श्री ने इस वर्ष बिना बोली लगाए स्वयं पिच्छिकाएं भक्तों को भेंट कीं और उन्हें संघ सेवा, ब्रह्मचर्य पालन तथा धर्मझआराधना के नियम दिलवाए। साथ ही,

चातुर्मास एवं दीक्षा में उत्कृष्ट सेवा करने वाले श्रावकों को भी पिच्छिकाएं प्रदान की गईं। रात्रि में राहुल सिंघल द्वारा शिक्षाप्रद नाटक की प्रस्तुति दी गई, जिसे श्रद्धालुओं ने भाव-विभोर होकर देखा। **आचार्य सुंदर सागर महाराज का 50वां अवतरण दिवस आज:** रविवार, 9 नवम्बर को कंवर का बाग स्थित विमल सन्मति सभागार में आचार्य श्री का 50वां अवतरण दिवस महोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। कार्यक्रम की शुरूआत शांति धारा, चित्र अनावरण, दीप प्रज्ज्वलन, मंगलाचरण, पाद प्रक्षालन और शास्त्र भेंट से होगी। मुख्य समन्वयक विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि जयपुर में पहली बार सन्मति पूजा विधान का आयोजन किया जा रहा है। सायंकाल भक्ति संध्या में प्रसिद्ध संगीतकारों द्वारा आचार्य श्री के चरणों में संगीतमय भजनों की प्रस्तुति दी जाएगी।

आचार्य श्री का जीवन परिचय

जन्म: 9 नवम्बर 1976, पहाड़ी धीरज, सदर बाजार, दिल्ली
मूल नाम: प्रदीप कुमार, पिता झ राधेश्याम जैन, माता झ सावित्री देवी
शिक्षा: बी.कॉम एवं कंप्यूटर तक
मुनि दीक्षा: 16 जुलाई 1996, फिरोजाबाद में आचार्य सामंती सागर से
आचार्य पद: 25 जनवरी 2007, औरंगाबाद में प्राप्त
अब तक 5,000 किलोमीटर से अधिक पद विहार, 60 दीक्षाएँ, 14 पंचकल्याणक
प्रमुख रचनाएं: उदगांव का उदयाचल, सुंदर गगरिया, सन्मति देशना, द्रव्य संग्रह, चौबीस ठाणा, बहता पानी निर्मला, भाव त्रिभंगी, इंद्रप्रस्थ से मुक्तिधाम, मन की गुप्ति

विनोद जैन कोटखावदा: मुख्य समन्वयक (प्रचार-प्रसार)
एडवोकेट महावीर सुरेन्द्र जैन: प्रशासनिक समन्वयक

बच्चों की सुरक्षा जागरूकता में राज्य सरकार की शानदार पहल

स्कूली छात्र-छात्राओं को दी गई "गुड टच–बैड टच" की जानकारी, सुरक्षित स्पर्श ही अपनेपन का अहसास है : सीमा स्वामी

नसीराबाद (रोहित जैन)

राज्य सरकार द्वारा बाल सुरक्षा और लैंगिक संवेदनशीलता के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से चलाए जा रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला में पंचायत समिति श्रीनगर के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय झड़वासा में "गुड टच–बैड टच" विषय पर विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम उपनिदेशक महिला अधिकारिता विभाग के निर्देशन में "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" योजना अंतर्गत एवं शिक्षा विभाग के सहयोग से आयोजित हुआ। कार्यक्रम को आगामी बाल दिवस के उपलक्ष में नो बैग डे के साथ जोड़ा गया। **चलचित्र के माध्यम से दी गई जानकारी:** कार्यक्रम में विद्यालय की उपप्रधानाचार्य सीमा स्वामी और प्रभारी शिक्षिका अनुज कुमारी ने ग्राम साथिन तारा देवी के सहयोग से कक्षा 8वीं से 10वीं तक के छात्र-छात्राओं को चलचित्र के माध्यम से अच्छे और असुरक्षित स्पर्श (Good Touch–Bad Touch) की जानकारी दी। छात्रों को समझाया गया कि शरीर के चार स्थान — मुख, छाती और कमर के नीचे के आगे–पीछे के भाग — गुप्त अंग माने जाते हैं। माता-पिता, डॉक्टर (माता-पिता की

उपस्थिति में) या दादा-दादी द्वारा स्नेह या आशीर्वाद के रूप में किया गया स्पर्श "अच्छा स्पर्श" (Good Touch) कहलाता है। जबकि इन्हीं भागों को यदि कोई इस प्रकार छुए जिससे असहजता, शर्म या डर महसूस हो, तो वह "असुरक्षित स्पर्श" (Bad Touch) की श्रेणी में आता है। ऐसी स्थिति में बच्चों को बिना झिझक जोर से विरोध करते हुए तुरंत अपने माता-पिता या शिक्षक को बताना चाहिए। यदि सहायता तुरंत न मिले, तो चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098 पर कॉल कर मदद मांगनी चाहिए। **प्रश्नोत्तरी, प्रतियोगिताएँ और पुरस्कार वितरण:** कार्यक्रम के दौरान शिक्षिका अनुज कुमारी ने बच्चों से गुड टच–बैड टच प्रश्नोत्तरी, खेलकूद और पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित करवाई। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को प्रशासक भंवर सिंह गौड़ और कृषक मित्र तेजमल जाट ने पुरस्कृत किया। इस अवसर पर वरिष्ठ शिक्षिका बरखा शर्मा, शिक्षिका सुमन सहाय, शिक्षक रामदेव जांगिड़ और दिनेश गुप्ता भी उपस्थित रहे। **महिला अधिकारिता विभाग की पहल:** उल्लेखनीय है कि 6 से 8 नवम्बर तक अजमेर जिले में उपनिदेशक महिला अधिकारिता मेघा रतन के निर्देशन में सभी ब्लॉकों की ग्राम पंचायतों में बालिका जन्मोत्सव, गुड टच–बैड टच जागरूकता, और नो बैग डे जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इनका उद्देश्य समाज में लैंगिक भेदभाव को समाप्त कर बालिकाओं को सुरक्षित, शिक्षित और सशक्त बनाना है, ताकि वे समाज की मुख्यधारा में आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सकें।

प्रस्तुति: रोहित जैन
संवाददाता–नसीराबाद

मुख्य उद्देश्य – "सीखेगा भारत, तभी तो आगे बढ़ेगा भारत"

कार्यक्रम के चीफ डायरेक्टर प्रमोद जैन ने बताया कि इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य है

"सीखेगा भारत, तभी तो आगे बढ़ेगा भारत।"

उन्होंने कहा कि इस फेस्टिवल के माध्यम से छात्रों, प्रोफेशनल्स, महिलाओं, उद्यमियों और समाज के हर वर्ग को Self Discovery, Mindset Mastery, Upskilling और Unstoppable Growth जैसी जीवनोपयोगी स्किल्स सिखाई जाएंगी। इस आयोजन का लक्ष्य है – स्किल्स और लर्निंग के माध्यम से राष्ट्र निर्माण को नई दिशा देना। **250 विशेषज्ञों की टीम और तकनीकी तैयारियाँ पूर्ण:** प्रोजेक्ट डायरेक्टर सुधीर जैन गोधा ने बताया कि आयोजन की सफलता सुनिश्चित करने के लिए 250 से अधिक विशिष्ट व्यक्तियों की टीम गठित की गई है। प्रत्येक सदस्य को अलग-अलग जिम्मेदारियाँ दी गई हैं। साथ ही कार्यक्रम की आधिकारिक वेबसाइट लॉन्च कर दी गई है, जहाँ से विस्तृत जानकारी और ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन किया जा सकता है। कार्यक्रम निदेशक कमल सचेती, दिनेश जैन बज और सीए नरेंद्र मित्तल ने बताया कि अब तक 70% सीटें बुक हो चुकी हैं, जबकि शेष सीटों की बुकिंग तेजी से जारी है। **देशभर की 700 संस्थाओं का सहयोग:** प्रोग्राम चेयरमैन विनोद जैन कोटखावदा एवं राजकुमार बैद ने बताया कि इस आयोजन को देश की 700 से अधिक संस्थाओं का समर्थन प्राप्त हुआ है। उनके अनुसार, यह कार्यक्रम न केवल राजस्थान, बल्कि पूरे भारत का गौरव बनेगा। चेयरमैन सीए दिनेश जैन, अनिल गोधा और प्रदीप जैन (लाला) ने बताया कि इस आयोजन की विशेषता यह है कि श्रोता भी 9 घंटे या उससे अधिक समय तक स्पीच सुनकर विश्व कीर्तिमान बना सकते हैं। **डिजिटल रजिस्ट्रेशन, डॉक्यूमेंट्री और लाइव प्रसारण:** मुख्य समन्वयक कमल बड़जात्या, डॉ. स्तुति थापर और अशोक कोटलर ने बताया कि 9588838868 नंबर पर मिस्ड कॉल देकर निःशुल्क रजिस्ट्रेशन कराया जा सकता है। संयोजक राजदीप सिंह और आर.एस. माथुरिया ने बताया कि सौरभ जैन के जीवन पर एक डॉक्यूमेंट्री तैयार की जा रही है, जो शीघ्र ही ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर प्रदर्शित होगी। मुख्य प्रभारी सचिन जैन और सीए सुनील जैन ने कहा कि कार्यक्रम का लाइव प्रसारण डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर किया जाएगा, जिससे इसे पूरे विश्व तक पहुँचाया जा सके। **डिजिटल प्रमोशन और समापन:** डिजिटल मीडिया प्रभारी अनिषा गोयल, श्वेता अग्रवाल, सारिका जैन और रानी सौगानी ने बताया कि डिजिटल प्रमोशन के माध्यम से कम से कम 20 मिलियन लोगों तक इस कार्यक्रम को पहुँचाने का लक्ष्य रखा गया है। युक्ति जैन ने शानदार ढंग से बैठक का संचालन किया, जबकि अंत में मीडिया प्रभारी राजकुमार बैद एवं विनोद जैन कोटखावदा ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा "यह आयोजन भारत की ज्ञान–संस्कृति और सीखने की परंपरा को नई ऊँचाई देगा। आइए, हम सब इस ऐतिहासिक क्षण का हिस्सा बनें।"

विनोद जैन कोटखावदा/राकेश गोदिका
मीडिया प्रभारी, जयपुर लर्निंग फेस्टिवल 2025